मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

नई नस्ल की दीनी तालीम की चिन्ता

"जिस तरह अपने ईमान और अरकान-ए-इस्लाम की हिफ़ाज़त हमारा फ़र्ज़ है और इसके लिए हर ज़रूरी इन्तिज़ाम हमारा दीनी फ़रीज़ा है, इसी तरह मुसलमानों की नई नस्ल के लिए दीनी तालीम का इन्तिज़ाम और मुश्रिकाना तालीम के असरात से बचाने की जद्दोजहद वक़्त का फ़रीज़ा और जिहाद और अफ़ज़ल व मुक़द्दस तरीन इबादत है। इसलिए कि अगर किसी दरख़्त को दरख़्त के दुश्मनों से बचाने और उसको सींचने और पानी देने से ग़फ़लत बरती गई तो वह दरख़्त ज़िन्दा और हरा-भरा नहीं रह सकता, और उससे फल-फूल की उम्मीद बेकार का ख़्याल है।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी

November 2021

Rs.15/-

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

कुर्रे-ए-अर्ज़ के आफ़ताब-ए-हिदायत (स०अ०व०)

''पस तमाम कुर्रे–ए–अर्ज़ की रोशनी के लिए यही आफ़ताब–ए–हिदायत है, जिसकी आलमे तस्ख़ीर किरनों के अन्दर दुनिया अपनी तमाम तारीकियों के लिए नूरे बशारत पा सकती है और इसलिए सिर्फ़ वही एक है, जिसके तुलू के पहले दिन को दुनिया कभी नहीं भुला सकती और अगर उसने भुला दिया तो वह वक़्त दूर नहीं कामिल इश्क़ व शीफ़तगी के साथ सिर्फ़ उसी के आगे झुकना पड़ेगा और उसी को अपना काबा–ए–उम्मीद बनाना पड़ेगा।

इस मुक़द्दस पैदाइश ने दुनिया में ज़ाहिर होकर यह नहीं कहा कि मैं सिर्फ़ बनी इस्राईल को फ़िरऔन से नजात दिलाने आया हूं, बल्कि उसने कहा कि तमाम आलमे इन्सानियत को ग़ैरे इलाही ग़ुलामों से नजात दिलाना मेरा मक़सदे जुहूर है। उसने सिर्फ़ बनी इस्राईल के घराने की गुमशुदा रौनक़ ही से इश्क़ नहीं किया, बल्कि तमाम आलम की उजड़ी हुई बस्ती पर ग़मग़ीनी की और उनकी दोबारा रौनक़ व आबादी का ऐलान किया, उसने ख़ुदा की मुहब्बतों की तरफ़ दावत नहीं दी, जो सिर्फ़ सीना की चोटियों पर या हिमालय की घाटियों में बसता है, बल्कि उसने रब्बुल आलमीन की तरफ़ बुलाया जो तमाम निज़ामे हस्ती का परवरदिगार है और उनके लिए तमाम कायनाते आलम को अपनी तरफ़ बुला रहा है। हमको दुनिया में सिकन्दर मिलता है, जिसने तमाम दुनिया को फ़तेह करना चाहा था, लेकिन हम दुनिया की पूरी तारीख़ में ख़ुदा के किसी रसूल को नहीं पाते, जिसने तमाम आलम की ज़लालतों और तारीकियों के ख़िलाफ़ ऐलाने जिहाद किया हो।

इसका सिर्फ़ एक ही ऐलान है जो आग़ाज़े ख़लक़त से अब तक कहा गया है और इसलिए अगर दुनिया नस्लों, क़ौमों और रक़्बों का नाम नहीं है, बल्कि मख़लूक़ाते इलाही उसकी पूरी नस्ल का नाम है, जो कुर्रे–ए–अर्ज़ की पीठ पर बस्ती है तो वह मजबूर है कि हर तरफ़ से मायूसी की नज़रे हटाकर सिर्फ़ एक ही ऐलाने आम के आगे झुक जाए और सिर्फ़ उसकी पैदाइश के दिन को अपनी उम्र का सबसे बड़ा दिन यक़ीन करे।

"क्या ही पाक और बरकतों का चश्मा है ज़ात उसकी जिसने अपने बरगुज़ीदा बन्दे पर अलफ़ुरक़ान नाज़िल किया, ताकि वह क़ौमों और मुल्कों ही के लिए नहीं, बल्कि तमाम आलमों की ज़लालत के लिए डराने वाला हो।"

दुनिया में जिस क़द्र दाइयाने हक़ व सदाक़त के ऐलानात मौजूद हैं, अगर दुनिया उनको भुला देगी तो यह सिर्फ़ क़ौमों और मुल्कों की सआदत की फ़रामोशी होगी, क्योंकि उससे ज़्यादा उन्होंने कुछ नहीं कहा, लेकिन अगर इस रबीउलअव्वल को भुला दिया तो यह तमाम कुर्रे–ए–अर्ज़ी की नजात को भुला देना होगा।"

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (रह०)

(विलादत–ए–नबवी: ३७–३९)

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:११ — नवम्बर २०२१ ई० — वर्ष:१३

संरक्षक

हज़रत मौलाना
सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाख़ुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो० हसन नदवी

इस अंक में:

इस वक़्त करने के दो काम..2
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी
मज़बूत इरादा और ताक़तवर फ़ैसला.....................3
हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी
बातिल माबूद और उनके परस्तार..........................5
हज़रत मौलाना सैय्यद राबे हसनी नदवी
विनम्रता का महत्व..७
हज़रत मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी
सच्चाई क्या है?...9
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी
दुनिया को इस्लामिज़्म की ज़रूरत..........................11
मौलाना मुहम्मद नाज़िम नदवी
ज़कात – इस्लाम का एक अहम हिस्सा..............13
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
भूख और ख़ौफ़...15
अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी
आज़ादी के बाद हमारा हाल.................................17
मुफ़्ती मुहम्मद महफ़ूज़ उस्मान रहमानी
सादगी का आला नमूना...18
मुहम्मद अरमुग़ान नदवी
फ़तेह व ग़ल्बे का हक़ीक़ी सरचश्मा....................19
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com — www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी0.229001

प्रति अंक 15रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू0

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

सम्पादकीय

इस वक़्त करने के दो काम

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुल्क में इस वक़्त सबसे बड़ा मसला ईमान की हिफ़ाज़त का है। नई नस्ल जिस तेज़ी के साथ बेराहरवी का शिकार हो रही है, वह एक लम्हा–ए–फ़िक्रिया है। मदरसों और मकतबों में आने वाले बच्चे कितने हैं। पढ़ने वाले पन्चानवे फ़ीसद से ज़्यादा बच्चे और बच्चियां स्कूलों और कालिजों में ही तालीम हासिल करते हैं। अफ़सोस की बात यह है कि इनको बेफ़िक्र छोड़ दिया जाता है। इनके दिमाग़ का सांचा–ढांचा किस तरह तैयार हो रहा है, इनको क्या सिखाया जा रहा है और अब तो खुलेआम किस तरह इनको इस्लामी तशख़्ख़ुस का बाग़ी बनाया जा रहा है, यह तमाम ईमान वालों के लिए, ख़ास तौर पर उलमा व क़ायदीने मिल्लत के लिए किसी ताज़ियाना कम नहीं। जो निसाबे तालीम तैयार किया गया है वह संजीदा फ़िक्र के तार व पौध को जिस तरह बिखेर देता है और बच्चों के मासूम ज़हनो को जिस तरह मुतास्सिर करता है, वह किसी इस्लामी फ़िक्र, इस्लामी निज़ामे तालीम से दिलचस्पी रखने वाले के लिए मख़्फ़ी नहीं।

यह फ़र्ज़ कर लिया गया है कि पढ़ने वाले बच्चे सिर्फ़ एक ख़ास तबक़े से ताल्लुक़ रखते हैं। कल ही किसी ने निसाबी किताब का एक लेसन दिखाया, जिसमें लिखा हुआ था कि मुसलमानों का त्योहार ईद है, वह इसमें ऐसा करते हैं और हिन्दुओं का त्योहार दीवाली है, इसमें हम इस तरह खुशियां मनाते हैं। "यह" "वह" और "हम" का फ़र्क़ किसी चीज़ की तरफ़ इशारा करता है। यह तो लाशऊरी की बात हुई। इससे कहीं बढ़कर मज़ाहिरे शिर्क को ख़ुशनुमा बनाकर पेश किया जाता है और इस्लामी तारीख़ को ऐसा मस्ख़ करके पेश किया जाता है कि मासूम ज़हनों के लिए वह किसी ज़हरे हलाहल से कम नहीं। एक तरफ़ यह निसाब और निज़ामे तालीम मुसलमान नस्ल को इरतिदाद की तरफ़ ले जा रहा है तो दूसरी तरफ़ बेहयाई का तूफ़ान करेला नीम चढ़ा की मिसाल पेश कर रहा है।

इधर तक़रीबन एक दहाई से जिस तेज़ी के साथ इरतिदाद के वाक़्यात सामने आ रहे हैं, वह पूरी नस्ल के लिए ख़तरे की घंटी हैं। एक दौरे अमली इरतिदाद का गुज़रा है, लेकिन अब खुला हुआ ऐतक़ादी इरतिदाद लगता है कि एक सैलाब है जो पूरी नस्ल को बहा ले जाएगा। इसको अगर रोकने की कोशिश न की गई और इसका सद्‌देबाब न हुआ तो अल्लाह ही ख़ैर करे।

इसके लिए दो बुनियादी काम हैं। अगर वसी पैमाने पर जगह–जगह इनको अख़्तियार किया जाए तो हालात बदल सकते हैं। पहला काम तो यह है कि ग़ैर इस्लामी स्कूलों–कालिजों में जाने वाले सौ फ़ीसद बच्चों के लिए जगह–जगह सुबह व शाम के मकातिब हस्बे ज़रूरत क़ायम किए जाएं। इसके लिए सबसे आसान यह है कि इसको मसाजिद से जोड़ दिया जाए और हर मस्जिद से मुताल्लिक़ महल्लों और घरों के ऐसे तमाम बच्चों और छोटी बच्चियों को एक–दो घंटे की इस्लामी तालीम दी जाए जो स्कूलों में जाते हैं और बड़ी बच्चियों के लिए महल्ला–महल्ला जुज़्वी मकातिब क़ायम किए जाएं।

दूसरी बात बहुत अहम और बुनियादी है पूरे मुल्क में इस्लामी स्कूलों का जाल बिछा दिया जाए और यह कोशिश की जाए कि हर मुसलमान बच्चा और बच्ची इस्लामी स्कूलों में ही तालीम हासिल करे और उनमें दो बातों का ख़ास एहतिमाम हो, एक तो वह स्कूल मेयारी हों और उसमें कोई कम्प्रोमाइज़ न किया जाए। दूसरा यह कि इनमें इस्लामी तालीम का ऐसा इन्तिज़ाम हो कि बच्चा एक सच्चा मुसलमान बन सके। अपने अक़ीदे के एतबार से और अपने अमल के एतबार से भी और जहां–जहां स्कूल न क़ायम हो सके हों वहां पहली तजवीज़ पर अमल किया जाए।

यह दो वह काम हैं जो हर दर्द व फ़िक्र रखने वाले के लिए, दीन की समझ रखने वाले के लिए इस वक़्त फ़र्ज़े ऐन है। अपने हर काम के साथ उलमा व दानिशवराने मिल्लत इनको अगर ज़रूरी समझ लें तो इंशाअल्लाह हालात बदल सकते हैं और यक़ीनन अल्लाह की मदद जान खपाने वालों के साथ होती है, जो अल्लाह के लिए अपनी जान खपाते हैं।

मज़बूत इरादा और ताक़तवर फ़ैसला
एक अहम ज़रूरत

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

आप सिलसिला–ए–इब्राहीमी से ताल्लुक़ रखते हैं। इस ख़ानदान का शेवा और शेआर यह रहा है कि दुनिया से जाने से पहले अपनी नस्ल के बक़ा–ए–ईमान और ताल्लुक़ बिल्लाह का इत्मिनान और ज़मानत कर ली जाए और दुनिया से जाने से पहले औलाद से यही अहद व पैमान लेकर जाए कि दुनिया में जब तक रहना है मुसलमान बनकर रहना है और जब जाना है, मुसलमान की हैसियत से जाना है:

"और यही वसीयत कर गए इब्राहीम अपने बेटों को और याक़ूब, ऐ बेटो! अल्लाह ने चुन कर दिया है तुमको दीन पस न मरना मगर मुसलमान।"

न सिर्फ़ यह अहद व पैमान ज़रूरी है बल्कि इसके लिए वसाएल का मुहैया करना, इसको मुमकिन और आसान बनाने की तदबीरें अख़्तियार करना और इसका इत्मिनान हासिल कर लेना भी ज़रूरी है, इसलिए हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) ने अपनी औलाद का इम्तिहान लिया और अपना पढ़ाया हुआ सबक़ सुनाया।

बहैसियत इस मज़हब के मुत्तबे और दाई के हम पर यह फ़र्ज़ है कि मुल्क की तालीमी तब्दीलियों का जायज़ा लेते रहें और हर वक़्त उन पर नज़र रखें और यह देखते रहें कि उनका असर हमारे मज़हब, हमारी नस्लों के दिल व दिमाग़ और उनके दीनी व अख़लाक़ी मुस्तक़बिल पर क्या पड़ेगा। मैं यह साफ़ कह देना चाहता हूं कि हमारा मज़हब बहुत से दूसरे मज़ाहिब के बरख़िलाफ़ बहुत जल्द मुतास्सिर होता है और बहुत ज़्यादा मुतास्सिर करता है और यह इसका नतीजा है कि वह एक ज़िन्दा और ज़ी शऊर मज़हब है। ज़िन्दा हस्ती मुतास्सिर भी होती है और मोअस्सिर भी, जो वजूद ज़िन्दगी का खो चुका होता है, या ज़िन्दगी के मैदान से किनाराकश हो जाता है, वह न मुतास्सिर होता है और न मुअस्सिर, हम अपने मज़हब के लिए यह पोज़ीशन क़ुबूल करने को तैयार नहीं कि दुनिया चाहे जितनी ही बदल जाए, ज़िन्दगी के चाहे कैसे ही नक़्शे बनें, नई नस्लों को ढालने के लिए कैसे ही सांचे तैयार हों, हमारे मज़हब पर कोई असर नहीं पड़ता, हम बदस्तूर मज़हबी फ़राएज़ अदा करते रहेंगे और इन्सान और ख़ुदा का रिश्ता इसी तरह क़ायम रहेगा। हमारा मज़हब एक पूरा निज़ामे हयात है, वह ज़िन्दगी के हर शोबे के लिए मुतअय्यन हिदायात और एहकाम देता है, इसलिए हमें हर मुल्क और हर दौर में चौकन्ना रहना चाहिए और यह देखते रहना चाहिए कि क्या हमें अपने ज़हनी, अख़्लाक़ी और रूहानी नशोनुमा के लिए मुनासिब फ़िज़ा और साज़गार माहौल मयस्सर है या नहीं और हमारी आइन्दा नस्लें सही मानों में मुसलमान रह सकेंगी या नहीं!

यह याद रखिए कि इस्लाम सिर्फ़ चन्द रुसूम और तक़रीबात का नाम नहीं, चन्द इबादात तक भी मख़्सूस नहीं, बल्कि यह मुकम्मल ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा और कामिल दीन है, एक मुख़्तसर जुम्ले में हम कह सकते हैं कि यह मुस्तक़िल तहज़ीब है, बाज़ लोग यह समझते हैं कि इस्लाम का कोई मख़्सूस तर्ज़े ज़िन्दगी और उसकी कोई मुस्तक़िल तहज़ीब नहीं, लिहाज़ा दूसरी क़ौमें और दूसरे मोमालिक के लोग इस्लाम क़ुबूल करें तो इस्लामी अक़ाएद को लेना ही काफ़ी है। तहज़ीबी अक़दार को लेने और अख़्तियार करने की ज़रूरत में बड़ी सराहत के साथ यह वाज़ेह कर देना चाहता हूं कि यह ग़ैर इस्लामी तर्ज़े फ़िक्र है, इस्लाम को इसरार है कि अक़ाएद व आमाल के साथ इसका मख़सूस तर्ज़े ज़िन्दगी भी अपनाना चाहिए। क़ुरआन व सुन्नत से मन्सूस तरीक़े से मालूम होता है कि इस्लाम एक ख़ास तरह की मुआशरत चाहता है, इस्लाम में सोने–जागने, खाने–पीने से लेकर आएली क़ानून, निकाह व तलाक़ और विरासत तक के मुतअय्यन ज़वाबित व एहकाम हैं और इस्लाम का मुतालबा है कि उन्हीं के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी जाए, उसकी ख़िलाफ़ वर्ज़ी न हो, नबी करीम (स0अ0व0) ने बड़ी बातों से लेकर इन्तिहाई मामूली और छोटी–छोटी बातों तक की तालीम

दी और सहाबा किराम ने उन्हें सीखा और बरता।

पूरे निसाबे तालीम क्या इब्तिदाई और नई तारीख़ की वज़अ व तदवीन तो बड़े वसीअ और इन्क़िलाब अंगेज़ मन्सूबे हैं। रस्मुल ख़त की तब्दीली ही क़दीम तहज़ीबी, इल्मी और मज़हबी सरमाये से रिश्ता ख़त्म कर देने और उनसे बेगाना बना देने के लिए काफ़ी है। आरनल्ड टू आइन बी जो इस ज़माने का बड़ा फ़लसफ़ी और मोअर्रिख़ है लिखा है कि: "अब किसी कुतुबख़ाने को आग लगाने की ज़रूरत नहीं, रस्मुल ख़त बदल देना काफ़ी है।" रस्मुल ख़त की तब्दीली से क़ौम का रिश्ता अपने माज़ी से बिल्कुल टूट जाएगा और उसकी पूरी तहज़ीब उसके लिए बेमाना होकर रह जाएगी, फिर जिस तरह चाहो उसे ले जाओ, जो चीज़ किसी मिल्लत को उसके माज़ी से, उसके मज़हब से, उसकी तहज़ीब से, उसके कल्चर से मिलाती है, वह रस्मुल ख़त है, रस्मुल ख़त बदला नस्ल बदल गई, आज हिन्दुस्तान में भी यही हो रहा है। फ़िरक़ावाराना फ़सादात महज़ मुल्क को बदनाम करते हैं, फ़ायदा उनका कुछ नहीं है, तालीम का निज़ाम बदलना काफ़ी है, आज से 60–70 साल पहले लिसानुल्अस्र अकबर इलाहाबादी मरहूम ने लिखा था:

शेख़ मरहूम का क़ौल अब मुझे याद आता है
दिल बदल जाएंगे तालीम बदल जाने से

और इससे ज़्यादा लतीफ़ अंदाज़ में उन्होंने इस हक़ीक़त को अपने मशहूर शेर में बयान किया है:

यूं क़त्ल से बचूं कि वह बदनाम न होता
अफ़सोस की फ़िरऔन को कालिज की न सूझी

उनके ज़हन में कालिज का वह तसव्वुर रहा होगा जिसमें सिर्फ़ क़िब्ती ज़बान पढ़ाई जाती हो और ऐसी तारीख़ जिसमें फ़िरआनिया की अलवहयत, उनके ग़ैर महदूद व ग़ैर मशरूत अख़्तियारात और मिस्र की दूसरी नस्लों और क़ौमों (बनी इस्राईल और बैरूने मिस्र से आयी हुई क़ौमें) की तहक़ीर आमेज़ तस्वीर और नफ़रत अंगेज़ तारीख़ पेश की गई हो।

ज़बान और रस्मुल ख़त बदल जाने से सक़ाफ़ती और तालीमी इन्क़िलाब से किसी मुल्क में जो अज़ीम व अमीक़ इन्क़िलाब आ सकता है और वह मुल्क अगर अपने अक़ाएद, तहज़ीब व तमद्दुन, इल्मी इश्तिग़ाल व कमाल, मसाजिद व मदारिस कसरत शान व शौकत के लिहाज़ से किसी ख़ालिस क़दीमुल इस्लाम (इस्लामी तमद्दुन और अरबी ज़बान के हामिल) की हैसियत से किसी क़दीम और ख़ालिस इस्लामी मुल्क से कम नहीं था, लेकिन वहां ज़बान और रस्मुल ख़त के बदल जाने और दीनी तालीम मौक़ूफ़ किये जाने की वजह से वह अक़ीदा–ए–अमल, ज़बान और तमद्दुन सक़ाफ़त के लिहाज़ से बिल्कुल ख़ालिस ग़ैर इस्लामी मुल्क बन गया तो वह उन्दुलुस है, जिसके इन्क़िलाबे हाल के लिए अल्लामा इक़बाल (रह0) का यह मिसरा काफ़ी है:

उसकी फ़िज़ा बेअज़ान, उसकी ज़मीन बेसुजूद

हज़रात! एक आज़ाद जम्हूरी हुकूमत का जिसकी बुनियाद ख़ालिस हुब्बुल वतनी, रज़ाकाराना, जज़्बा–ए–ख़िदमत और उस मुश्तरका जंगे आज़ादी पर पड़ी हो, जिसमें मुल्क के तमाम शहरी और अक्सरियत व अक़्लियत के अफ़राद दोश–बदोश शरीक रहे हों, सबसे अज़ीम और मुक़द्दस फ़र्ज़ यह है कि उसकी आबादी के तमाम अन्सर और उसके मुख़्तलिफ़ फ़िरक़ों और अक़्लियतों को इस मुल्क में अपने और अपनी नस्ल के तहफ़्फ़ुज़ का पूरा एहसास और मुकम्मल इत्मिनान हो, किसी हुकूमत की नाकामी और दस्तूर की ख़ामी की इससे बढ़कर मिसाल नहीं हो सकती कि इस मुल्क का कोई शहरी तहफ़्फ़ुज़ के एहसास से महरूम हो और वाज़ेह रहे कि इस हक़ीक़त पसंद इन्सान की हैसियत इसमें जब तहफ़्फ़ुज़ का लफ़्ज़ बोलता हूं तो उससे मुराद जिस्मानी व मानवी, नस्ली व एतक़ादी हर तरह का तहफ़्फ़ुज़ होता है।

इस बारे में मुसलमानों का मेयार और ज़्यादा बुलन्द और उनकी हिस इस सिलसिले में और ज़्यादा तेज़ है, इसका ताल्लुक़ उनके मज़हबी मोअतक़दात, उनके हुसूले ज़िन्दगी और उनके इस फ़हम व फ़िक्र और नुक़्ता–ए–नज़र से है जो दीन व दुनिया, फ़ौज़ व फ़लाह, फ़र्द व जमाअत की कामयाबी व सआदत के बारे में वह रखते हैं, उनका तक़ाज़ा है कि एक तरफ़ इस मुल्क के मुसलमान आईनी जद्दोजहद के तमाम तरीक़ों से काम करके और इज्तिमाई अज़्म व फ़ैसला की पूरी ताक़त से इस मुल्क में अपने लिए हक़ीक़ी और कामिल तहफ़्फ़ुज़ की फ़िज़ा पैदा करें, जिसके बग़ैर आज़ादी आज़ादी नहीं, ग़ुलामी है और घर चमन नहीं क़ैदख़ाना और क़फ़स है।

बातिल माबूद और उनके परस्तार

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

"न हमने आसमानों और ज़मीन को पैदा करते हुए उन्हें हाज़िर किया था और न खुद उनको पैदा करते हुए और हम बहकाने वालों को (दस्त व) बाज़ू नहीं बनाते और जिस दिन वह फ़रमाएगा कि बुला लो मेरे उन साझियों को जिनको तुमने (साझी) समझा था तो वह आवाज़ें देंगे बस वह उनको कोई जवाब न दे सकेंगे और हम उनके दरमियान हलाकत की एक ख़न्दक़ हाएल कर देंगे और मुजरिम लोग आग देखेंगे तो समझ लें कि उनको इसी में गिरना है और उससे वापसी का उनको कोई रास्ता न मिलेगा।" (सूरह कहफ़ : 51—53)

अल्लाह तआला इस आयत में मुश्रिकीन से ख़िताब करके फ़रमाता है कि जब हम आसमान व ज़मीन पैदा कर रहे थे तो यह हमारे सामने मौजूद नहीं थे और अगर यह मौजूद होते भी तो क्या हम अपना काम उनके सुपुर्द कर देते? ऐसा कुछ नहीं है, बल्कि खुद उनको भी हम ही ने पैदा किया है, तो जब हम उनको पैदा कर रहे थे, क्या उस वक़्त यह देख रहे थे कि हम उनको पैदा कर रहे हैं? क्या उन्होंने अपनी पैदाइश को देखा है? ज़ाहिर है यह तो उस वक़्त भी कुछ नहीं थे और बाद में भी कुछ नहीं होंगे, फिर फ़रमाया कि उनमें से जो लोग गुमराह करने वाले हैं उनको हम अपना "अज़्द" यानि मुआविन नहीं बनाते, अरबी ज़बान में अज़्द शाना को कहते हैं, यह लफ़्ज़ अरबी में मदद के लिए भी इस्तेमाल होता है, इसीलिए फ़रमाया कि हम ऐसे लोगों को मददगार नहीं बना सकते जो गुमराह करने वाले हैं।

इरशाद है कि जिनको तुमने अपना माबूद समझ रखा है, उनसे तुम अपनी मुसीबतों को टालना चाहते हो और उनसे फ़ायदा उठाना चाहते हो, यह वह हैं जिनकी कोई हैसियत नहीं है, जब हम दुनिया बना रहे थे और यह पूरा आलम बना रहे थे तो क्या उस वक़्त यह मौजूद थे? क्या उस वक़्त हमारे साथ शरीक थे? क्या यह चीज़ों को जानते हैं? यह तो वहां मौजूद भी नहीं थे, तो अब हम निज़ाम चलाने में उनसे क्या मदद लेंगे? क्या हम उनको अपना वास्ता बनाएंगे? क्या हमें इसकी ज़रूरत है कि हम अपना काम उनके सुपुर्द करें? हमें इसकी हरगिज़ कोई ज़रूरत नहीं है।

अल्लाह तआला अपने हुक्म की तन्फ़ीज़ में "कुन फ़यकुन" से काम लेता है, उसने जब इरादा किया और चाहा तो चीज़ हो जाती है, उसको किसी वास्ता या तदबीर या ज़रिया की ज़रूरत नहीं है, अल्लाह तआला के यहां ज़रिया कुछ नहीं है, उसका चाहना और उसके इल्म में आना ही काफ़ी है, बस इसी से चीज़ वजूद में आ जाती है, इसी लिए कुरआन मजीद में "ला यअलम" की ताबीर कई जगह इस्तेमाल हुई है, एक जगह इरशाद हैः

"कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को उस चीज़ की इत्तेला दे रहे हो जो आसमानों में और ज़मीन में वह नहीं जानता, जो कुछ वह शरीक करते हैं उसकी ज़ात उससे पाक है और बहुत बुलन्द है।" (सूरह यूनुसः 18)

इसका मतलब यह नहीं है कि अल्लाह किसी चीज़ से नावाक़िफ़ है, बल्कि अल्लाह के न जानने का मतलब यह है कि वह चीज़ है ही नहीं और उसका कोई वजूद ही नहीं है, अल्लाह का इल्म किसी चीज़ के वजूद की अलामत है, किसी चीज़ का वजूद बग़ैर अल्लाह के इल्म के मुमकिन नहीं, अल्लाह कहता है कि यह ऐसी बेतुकी बात करते हैं और ऐसी चीज़ों का दावा करते हैं कि वह अल्लाह को मालूम नहीं है, उसकी ज़ात उनकी सब बातों से बिल्कुल पाक और बरतर है।

अल्लाह के इल्म की हक़ीक़त को समझना चाहिए, कायनात में हमें सारा कुछ जो नज़र आ रहा है, यह उसी के इल्म ही का नतीजा है, अगर ख़्याल का लफ़्ज़ ना मुनासिब न हो तो यह कहा जा सकता है कि बस अल्लाह को एक ख़्याल आया और फ़ौरन चीज़ वजूद में आ गयी यानि चीज़ के वजूद में आने के लिए उसके इल्म में आना ही काफ़ी है। इसीलिए अल्लाह को अपना

हुक्म जारी करने में किसी वास्ते की ज़रूरत नहीं है कि वह किसी काम के लिए किसी को ज़रिया बनाए और अफ़सर या लोग मुक़र्रर करे कि यह वह काम करें, उसके सामन फ़रिश्ते भी जामिद की तरह हैं, अल्लाह चाहता है तो फ़रिश्ते काम करते हैं और वह उसके चाहने को ही जानते हैं, जब अल्लाह किसी चीज़ को जानता है तो उनको फ़ौरन उसका इल्म हो जाता है और वह उसी में लग जाते हैं, लिहाज़ा हमें यह समझना चाहिए कि पूरी कायनात का जो इतना बड़ा निज़ाम चल रहा है, यह अल्लाह के इल्म ही से चल रहा है और अल्लाह के इल्म को फ़रिश्ते जान लेते हैं और फिर उसी के इल्म के मुताबिक़ काम करते हैं:

"और जो कहा जाता है वह (फ़रिश्ते) बजा लाते हैं।" (सूरह नहलः 60)

गुमराह करने वालों का यह नतीजा बयान किया गया है कि जब क़यामत क़ायम होगी तो उस वक़्त मुश्रिकीन के माबूद भी हाज़िर होंगे, यानि वह बुज़ुर्ग और बड़ी शख़्सियतें जिनको यह लोग अपना कारफ़रमा समझते हैं और उनके मुताल्लिक़ उन्होंने यह सुना था कि यह बड़े नेक लोग थे, इसीलिए वह उनको अपने माबूद की तरह इस्तेमाल करने लगे थो और उन्हीं से सबकुछ मांगते थे और अल्लाह को छोड़कर उन्हीं की दुहाई देते थे, यह सब वहां मौजूद होंगे, उस वक़्त अल्लाह मुश्रिकीन से कहेगा कि बुलाओ अपनी उन शरीक दारों को जिनको तुमने अल्लाह का शरीक बना लिया था और तुम उनके साथ अल्लाह वाला मामला करने लगे थे, तुमने यह समझ लिया था कि वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं और उनमें ऐसी ताक़त मौजूद है, तो आज उन्हें बुलाओ ताकि वह तुम्हारी मदद करें, तुम दुनिया में यह समझते थे कि वह सबकुछ कर सकते हैं तो अस्लन आज तुम्हारी मदद का मौक़ा है, चुनान्चे वह अपने माबूदाने बातिल को पुकारेंगे कि हमारी मदद करिये, आज हम आपकी मदद के बहुत ज़्यादा मोहताज हैं, हम दुनिया की ज़िन्दगी में आपकी मदद मांगते थे, आपके सामने खड़े होकर हाथ जोड़ते थे और दुआ किया करते थे, लेकिन वह लोग उनकी पुकार पर लबबैक नहीं कहेंगे और न ही उनकी बात का कोई जवाब देंगे, इसलिए कि वह चाहे उस दिन मुसीबत में होंगे, उनका ख़ुद हिसाब हो रहा होगा और उनको ख़ुद अपनी पड़ी होगी, अगर वह मदद करने की पोज़ीशन में होते, तब भी इस मौक़े पर मदद नहीं कर सकते थे, क्योंकि वह तो ख़ुद उस दिन ख़तरे में होंगे, अल्लाह फ़रमाता है कि उस दिन हम उन दोनों के दरमियान एक ख़न्दक भी बना देंगे।

दुनिया में जिन मुजरिमीन ने अल्लाह की नाफ़रमानी की है, वह अपने सामने जहन्नम की आग को फैला हुआ देखेंगे और उस वक़्त भागने का कोई रास्ता नहीं मिलेगा, बल्कि उन्हें आग के तूफ़ान से गुज़रना होगा और उन्हें यह पूरी तरह यक़ीन हो जाएगा कि अब वह आग में जाने वाले हैं, इसलिए कि आग उनकी तरफ़ चली आ रही है और उससे बचने का कोई रास्ता नहीं है, तो वह समझ लेंगे कि अब हमें इसमें दाख़िल होना ही है, अल्लाह ने फ़रमाया कि उससे उन्हें पलटने की कोई जगह और कोई रास्ता नहीं मिलेगा, जिसके ज़रिये वह आग से बच सकें, बल्कि जहन्नम की आग चारों तरफ़ से उन्हें घेरती चली जा रही होगी।

फ़रमाया कि यह सूरतेहाल पेश आने वाली है, दुनिया की ज़िन्दगी में जिसको चाहो माबूद समझ लो, जिसको चाहो समझ लो कि वह कारपरदाज़ है, तुम्हारा काम कर देगा, अल्लाह वाला काम कर देगा, ज़ाहिर है जो लोग क़ब्रों पर जाते हैं, बुतों के सामने जाते हैं, वह यह समझते हैं कि अल्लाह वाला काम यह करते हैं, इन्सान वाला काम तो ख़ुद ही कर लेते हैं, इन्सान को जितना अख़्तियार अल्लाह ने दिया है वह तो करता ही है, जहां इन्सान का अख़्तियार ख़त्म हो जाता है मर्ज़ है कि वह नाक़ाबिले इलाज है, सारा इलाज कर लिया, जो कर सकते थे, इन्सान की कोशिश में जो था सब कर डाला, कुछ नहीं हुआ तो अब ऐसे से मांगो जो कुछ कर सकता हो, तो फ़रमाया कि उन लोगों के सामने यह बात रखनी चाहिए कि यहां तो यह बेवक़ूफ़ी में अल्लाह का शरीक समझ रहे हैं, उनके अन्दर अल्लाह की ताक़त महसूस कर रहे हैं, वहां जब क़यामत में यह सब मौजूद होंगे, उनके यह माबूद भी और उनके मोहतरम लोग भी और यह भी, और यह उनको पुकारेंगे, वह कोई जवाब नहीं देंगे, वह इस हाल ही में नहीं होंगे कि कुछ कह सकें।

विनम्रता का महत्व

हज़रत मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०)

तकब्बुर, तवाज़ो के बिल्कुल बरख़िलाफ़ चीज़ है अल्लाह के फ़ज़्ल व ईनाम को अपना "ज़ाति व मूरूसी हक़" समझने की बीमारी जब पकड़ती है, तो शुक्रे इलाही का जज़्बा फ़ना हो जाता है, और अल्लाह से निस्बत रखने वाली चीज़ से मुहब्बत महज़ इस वजह से होती है कि यह "हमारी" है। गोया मुहब्बत की बुनियाद अल्लाह की ज़ात नहीं बल्कि ख़ालिस नफ़्सानियत बन जाती है, यह बड़ा ख़तरनाक रोग है, जो दीन के पर्दे में छिप कर आता है। यहूद को तौरेत और हज़रत मूसा से मुहब्बत इसलिए नहीं थी कि यह अल्लाह की किताब और अल्लाह के रसूल हैं, बल्कि इसलिए मुहब्बत थी कि यह हमारे रसूल और हम पर उतरी हुई किताब है। इस ग़लत मुहब्बत का अंजाम यह हुआ कि जब अल्लाह ने आख़िरी नबी को भेजा और अपनी आख़िरी किताब उतारी तो यह बदल गये और अल्लाह की किताब होने के बावजूद उससे ऐराज़ किया, और हवाला यही दिया कि हम तो बस उसको मानेंगे जो हम पर उतरी है। गोया मरकज़े मुहब्बत अल्लाह की ज़ात नहीं रही बल्कि अपनी ख़ालिस निस्बत हुई। ऐसी मुहब्बत भले ही वह किताबे इलाही या रसूले इलाही के हवाले ही से क्यूं न हो, अल्लाह के नज़दीक हरगिज़ क़ाबिले कुबूल नहीं है। इस ज़माने में जो वसाएल को मक़ासिद पर तरजीह देने का मिज़ाज पाया जाता है, वह भी इस यहूदी मिज़ाज से मिलता–जुलता है। कोई अल्लाह का बन्दा दीन की सच्ची ख़िदमत कर रहा हो और हम सिर्फ़ इस वजह से उस शख़्स से दूरी रखें कि वह हमारे खास तर्ज़ को नहीं अपनाता है। इसका नाम मुहब्बते दीन या हुब्बे अल्लाह हरगिज़ नहीं।

इसी तरह कोई महज़ हमारे तर्ज़ पर है लेकिन मक़ासिदे दीन से दूर है तो हमारा उससे मुहब्बत रखना भी एक लिहाज़ से "निस्बत" को हक़ीक़त पर तरजीह देना है। यहूद को अपनी निस्बतें हालांकि इसमें वह सच्चे नही थे। इस क़दर अज़ीज़ थीं कि उसके मुक़ाबले पर अल्लाह से सच्ची मुहब्बत को भी उन्होंने क़ुर्बान कर दिया और यह समझ बैठे कि उन्हीं निस्बतों के सहारे वह अल्लाह की जन्नत जीत लेंगे। लेकिन नतीजा यह हुआ कि वह अस्ल हिदायत से महरूम होकर दुनिया व आख़िरत दोनों में बर्बाद हो गये। नसारा भी उन्हीं की देखादेखी में निस्बतों के बसीर बन गये। हक़ीक़त न इनको मिली न उनको।

अल्लाह का दीन ग़ैर मशरूत मुहब्बत और इताअत का मुतालिबा करता है। मरकज़े मुहब्बतुल्लाह की ज़ात हो न कि किसी की ख़ास निस्बत। इसीलिए क़ुरआन मजीद में हज़रत इब्राहीम व इस्माईल अलै0 का वाक्या बयान किया कि अस्ल मक़सूद अल्लाह के लिए सबकुछ तज देना है। इसीलिए इन दोनों हज़रात की नुमायां सिफ़त अला सलाम को इन्तिहाई नुमायां करके दिखाया गया है। फिर बनी इस्राईल के जद्दे अमजद हज़रत याक़ूब का तज़किरा भी किया गया है कि उनकी अस्ल वसीयत अला "अलइस्लाम" पर क़ायम–दायम रहने की थी। किसी ख़ास निस्बत को क़ायम रखने की हरगिज़ नहीं थी। फिर तमाम निस्बतों और हक़ीक़तों का लब्बे लुबाब इस आयत में मज़ीद वाज़ेह किया गया है:

खुल गई जब चश्मे बसीरत
अपनी नज़र में गिर गए हम

और एक दूसरी जगह अहले इस्लाम की तारीफ़ एक ख़ास वस्फ़ से करके यह पैग़ाम दिया गया है कि इससे वह बाल बराबर भी न हटें, वह वस्फ़ है: ईमान वाले तो अल्लाह से बेपनाह मुहब्बत रखते हैं, यहूद व नसारा ज़ाहिर दारी के चक्कर में इस अज़ीज़ अज़ जान मताअ को गुम कर बैठे और मुश्रिकीने मक्का को देवी–देवता अपनी जन्नत में दाब ले गये। अल्लाह से मुहब्बत न इनके हिस्से में आयी, न उनके हिस्से में। इन तमाम उमूर को पेशे नज़र रखकर आइन्दा सुतूर का मुताला करें। इरशादे इलाही है:

"और बित्तहक़ीक़ हमने मूसा को किताब अता की

और उनके बाद कई रसूलों को उनके पीछे भेजा और हमने ईसा बिन मरियम को खुली निशानियां दीं और रूहे अक़दस के ज़रिये उनको ताक़त बख़्शी, तो क्या ऐसा नहीं हुआ कि जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास ऐसी बात लेकर आता जो तुम्हारी ख़्वाहिश के मुताबिक़ नहीं थी तो तुमने तकब्बुर किया। इस तरह एक जमाअत को तुमने झुठला दिया और एक जमाअत को तुम क़त्ल करते रहे।''

इसका ताल्लुक़ मौजूदा यहूदियों से है, और ज़िमनन उनके आबा व अजदाद का भी तज़किरा है। जबकि इससे क़ब्ल की आयात में उनके आबा व अजदाद की नाफ़रमानियां बयान की गईं हैं और वहां ज़िमनन मौजूदा यहूद का भी तज़किरा है। इस बात के आग़ाज़ में हज़रत मूसा व हज़रत ईसा का तज़किरा है ताकि पूरा अहाता हो। और यह बताया जाए कि हज़रत मूसा से लेकर बनी इस्राईल के आख़िरी नबी हज़रत ईसा तक तुम्हारा क्या रवैया रहा। हक़ीक़त में मौजूदा यहूद पर यह फ़र्दे जुर्म आयत की जा रही है कि तुम जो तौरेत और इस्राईली पैग़म्बरों का हवाला देकर उस दीन का इनकार कर रहे हो और मुहम्मद स0अ0 की तकज़ीब कर रहे हो, इसमें तुम दोहरे मुजरिम हो। एक यह कि अल्लाह का दीन हमेशा एक ही रहा है। अल्लाह की साबिक़ा शरीअत का हवाला देकर मोजूदा शरीअत को ठुकराना ख़ुदा परस्ती नहीं बल्कि बददयानती है। इसी तरह अल्लाह की साबिक़ा किताब का वास्ता देकर मौजूदा किताब की तकज़ीब करना खुद अल्लाह की शान में गुस्ताख़ी करना है। दूसरा जुर्म यह है कि जिन अम्बिया किराम के हवाले से तुम हज़रत मुहम्मद स0अ0 को झुठला रहे हो और जिस तौरेत का नाम लेकर तुम क़ुरआने करीम का इनकार किये जा रहे हो, इन सबके साथ क्या तुम्हारा वाक़ई वह रवैया रहा है, जिसका तुम दावा रखते हो। अम्बिया के क़त्ल व तकज़ीब से तुम्हारी तारीख़ भरी पड़ी है। तौरेत के साथ तुमने जो हश्र किया है वह अज़हर मिनश्शम्स है। फिर किस मुंह से तुम यह बात कह रहे हो।

दीन व शरीअत से मुहब्बत फ़नाइयत का जज़्बा पैदा करती है। फिर उसके लिए बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी पेश करना आसान हो जाता है। दूसरी तरफ़ एक और जज़्बा है, जिसमें इन्सान अपनेआप को मक़ामे नाज़ पर फ़ायज़ करके भी अपनेआप को शरीअत का ठेकेदार समझता है। यहूद झूठ–मूठ अपने आपको उसी मक़ाम पर समझते थे, उसका तबई नतीजा यही निकलना था जो क़ुरआने करीम ने बयान किया है कि जब भी उनकी ख़्वाहिशात से टकराने वाली कोई चीज़ लेकर हज़राते अम्बिया आते तो यह उनको क़त्ल करने से भी दरेग़ न करते। झुठलाना तो उनके नज़दीक एक मामूली काम बन गया था। हक़ीक़त में तमन्नाओं और आरज़ूओं की दुनिया इन्सान को बहुत दूर ले जाकर मारती है। यह तमन्नाएं सदाक़त व हक़ीक़त का एक वार भी सह नहीं पातीं। क़ुरआने करीम ने जब अस्ल हक़ाएक़ उनकी निगाहों के सामने पेश किये तो यहूद उनको बर्दाश्त न कर सके और उसे सच्चाई के साथ क़ुबूल करने के बजाए फिर उन्हीं तमन्नाओं के आग़ोश में चले गये, जिन्होंने सदियों तक उनको ग़फ़लत की नींद में मारे रखा था। इनका यह मर्ज़ इस क़दर लाइलाज बन चुका था कि खुद क़ुरआन को यह ऐलान करना पड़ा:

''बल्कि अल्लाह ने उनके कुफ़्र की पादाश में उन पर फिटकार बरसाई है, इसलिए यह लोग बस बराए नाम ईमान रखते हैं।'' अहले ईमान के लिए इन आयात में यह पैग़ाम है कि दीन को हमेशा मतलूब बनाएं। यह रास्ता मुहब्बते ख़ुदावन्दी तक पहुंचाता है। वरना अल्लाह का क़ानून बेलाग है। वह जिस तरह कल था आज भी वैसा ही है।

अपने आप को बहुत बड़ा समझने के लिए ''इस्तकबरतुम'' का लफ़्ज़ इस्तेमाल होता है। जो उस मौक़े पर यहूद के लिए क़ुरआन में इस्तेमाल हुआ है। ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ हज़राते अम्बिया को भी पैग़ाम पेश करते तो उनकी अकड़ में और इज़ाफ़ा होता कि हमसे ऐसी बातों का मुतालिबा हो रहा है जबकि हमारा मक़ाम उन एहकामात से बहुत बुलन्द है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को यह अदा इस क़द्र नापसंद है कि ऐसे तमाम लोगों के लिए निहायत ज़िल्लत आमेज़ जहन्नुम की वईद सुनाई गयी है।

आयते बाला में ''तक़्तुलून'' का लफ़्ज़ फ़रमाया गया है। यह फ़ेले मुज़ारे हाल और इस्तमरार को बयान करता है यानि अम्बिया को क़त्ल करने से तुम्हारा जी नहीं भरा है, अब भी वही कैफ़ियत बरक़रार है।

(शेष पेज 12 पर...)

सच्चाई क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

पसंदीदा सिफ़ातः

अबूसुफ़ियान ने हरकुल के सामने रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के मुताल्लिक़ जिन सिफ़ात का ज़िक्र किया उनमें पहली चीज़ नमाज़ है, जो इब्तिदा ही से फ़ज़ हो गयी थी, रसूलुल्लाह (स0अ0व0) जब मेराज पर तशरीफ़ ले गए तो उम्मत के लिए नमाज़ का तोहफ़ा मिला था, उसके अलावा उन्होंने जो सिफ़ात बयान कीं यह सब वह सिफ़ात हैं जिनका हुक्म रसूलुल्लाह (स0अ0व0) शुरू ही से देते थे, जैसेः अबूसुफ़ियान ने ज़िक्र किया कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) सच्चाई और सदक़े का हुक्म देते हैं, ज़ाहिर है यह वह सिफ़ात हैं जो हर जगह और हर मज़हब में पसंदीदा हैं।

इन्सानी समाज में सच्चाई की अहमियतः

जो शख़्स अपने अन्दर ज़रा सी इन्सानियत रखता है तो वह सच्चाई को पसंद करता है और सच्चाई के बारे में जानता है कि यह नजात का रास्ता है, सच्चाई एक ऐसी बुनियादी सिफ़त है कि बेहतर समाज को बनाने में उसका बहुत ही अहम किरदार है, इसलिए अगर झूठ समाज में पनपेगा, तो न कोई कारोबार सही चल सकता है, न मामलात सही अंजाम दिये जा सकते हैं, न आपस के ताल्लुक़ात सही तरीक़े पर क़ायम रह सकते हैं, इसलिए कि फिर उसमें हेर–फेर होगा, आदमी कहेगा कुछ और करेगा कुछ और, तो किसी पर किसी को कोई एतमाद बाक़ी नहीं रह सकता और समाज एतमाद ही से चलता है, जब आदमी को एतमाद होता है तो आदमी मामलात अंजाम देता है, एक दूसरे से रवाबित क़ायम करता है, ताल्लुक़ात बहाल करता है, और अगर यह एतमाद न हो तो यह सारा कारोबार फ़ेल हो जाएगा।

इन्सानी समाज में सच्चाई की बड़ी अहमियत है और हर मज़हब के लोग इसकी अहमियत को समझते हैं, शायद सिर्फ़ शिया ही ऐसे होंगे जिनके यहां तक़य्या है, तक़य्या का मतलब यह है कि अपने बचाव के लिए झूठ बोला जा सकता है, उनके यहां झूठ बोलना जाएज़ है, बल्कि बहुत सवाब का काम है, उन्होंने यह बात यहां से चलाई कि हज़रत अली (रज़ि0) रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के ख़लीफ़ा व जानशीन थे, लेकिन मआज़ अल्लाह मआज़ अल्लाह हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि0) ने उनका हक़ ग़सब किया, यहां यह सवाल पैदा होता है कि अगर हक़ ग़सब हुआ तो हज़रत अली (रज़ि0) मुक़ाबले के लिए खड़े क्यों नहीं हो गए? उनको हक़ के लिए लड़ना चाहिए था, मगर फिर भी उन्होंने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि0) से बैत क्यों कर ली? तो इसका जवाब यह देते हैं कि उन्होंने तक़य्या कर लिया था, यानि वह जानते थे कि लड़ाई–झगड़ा होगा तो उससे बचने के लिए उन्होंने जानते हुए कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि0) हक़ पर नहीं है फिर भी बैत कर ली, गोया उन्होंने अपने को बचाने के लिए अमली तौर पर झूठ बोला और अपनी ज़बान से भी झूठ बोला, यानि वह सरापा झूठ बन गए, इसीलिए उन लोगों के नज़दीक झूठ जाएज़ है। वाक़्या यह है कि ऐसा शायद ही कोई मज़हब हो, जिसमें झूठ को अहमियत दी गयी हो, वरना हर मज़हब के लोग सच्चाई की अहमियत को समझते हैं और दुनिया इसी सच्चाई पर क़ायम है, अगर सच्चाई न हो तो दुनिया का निज़ाम नहीं चल सकता, इसी तरह सदक़ा व ख़ैरात करना और लोगों की मदद करना, या पाक दामनी वग़ैरह की भी अहमियत हर मज़हब में है।

ईसाई मज़हब की तालीमातः

जो मज़हब अपनी अस्ल को बिल्कुल छोड़ चुके हैं और वह रास्ता भटक चुके हैं तो उनके यहां इन्सानियत सोज़ हरकते होती हैं और आख़िरी दर्जे की बुराइयां होती हैं, आज यूरोप में जो कुछ हो रहा है यह कोई मज़हब नहीं है, यह एक कल्चर है, ईसाईयत की जो बुनियादें हैं, एक तो वह ईसाईयत है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम लेकर आए थे, जो हक़ीक़त में इस्लाम था, इसकी तो पहले मरहले में ही छुट्टी हो गयी थी, पोल्स जिसे सेंट पॉल कहते हैं उसने ईसाईयत का तिया–पांचा कर दिया, वह इन्तिहाई मक्कार और धोखेबाज़ था, लिहाज़ा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने की जो अस्ल ईसाईयत है, वह

ख़त्म हो गयी, बल्कि उनके बड़े–बड़े मुफ़क्किरीन ने यह बात लिखी है कि अगर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की बातें लिखी जाएं तो अख़बार के डेढ़ कॉलम से आगे नहीं बढ़ सकतीं, गोया उनके पास हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तालीमात का जो कुछ है ही नहीं, बल्कि वह तो सब बाद का फ़साना गढ़ा हुआ है, लेकिन यह भी वाक़्या है कि इस फ़साने में वह खुराफ़ात नहीं थी जो आज यूरोप के कल्चर में हैं।

यूरोप का कल्चर बिल्कुल एक अलग चीज़ है, उसको दुनिया में कोई भी मज़हब वाला जो इन्सानियत रखता हो अच्छा नहीं समझता, पाक दामनी को सब अच्छा समझते हैं, उनका एक बड़ा मुफ़क्किर पैदा हुआ अलफ़्राइड के नाम से, उसने इबाहियत का जो नज़रिया पेश किया कि सब जाएज़ लिहाज़ा जो चाहो करो, गोया उसने इन्सान को जानवर बना दिया, वह कहता है जैसे जानवरों को आज़ादी है वैसे ही इन्सान को भी आज़ादी है, यानि अल्लाह तआला ने अक़्ल देकर इन्सान को जो एक रेड लाइन दी थी कि अच्छा किया या बुरा किया है, उसने वह रेड लाइन ख़त्म कर दिया, दीवाने तो दीवाने होते हैं, कुछ लोग उसके ग़ैर मामूली दीवाने हो गए और वह हक़ीक़त में दीवानगी नहीं, बल्कि उन्होंने अपनी ख़्वाहिशात को पूरा करने का एक बहाना तलाश कर लिया।

इन्सानियत सोज़ हरकतें:

आज आज़ादी के नाम पर जो कुछ हो रहा है यह सब इन्सानियत सोज़ बातें हैं, इन्सानियत से गिरी हुई बातें हैं, कोई भी मज़हब इसको पसंद नहीं करता, हर मज़हब यही कहता है कि पाक दामनी होनी चाहिए, एहतियात होनी चाहिए, इसका हुक्म दिया गया, इसके रास्ते बताए गए और सबसे बढ़कर इस्लाम ने इसकी वाज़ेह तस्वीर पेश की, जिससे बढ़कर वाज़ेह तस्वीर कोई दूसरा मज़हब पेश नहीं कर सकता, इन्सान के अन्दर यह ज़रूरतें हैं और उन ज़रूरतों की तकमील का सामान अगर नहीं किया जाएगा तो दो शक्लें होंगी या तो इन्सान बिल्कुल जानवर बन जाएगा और सारे हुदूद पार कर जाएगा और या फिर उसकी ऐसी शक्ल बन जाएगी कि उसकी सलाहियतें भी बर्बाद और ज़ाया हो जाएंगी, ईसाईयों ने यही किया कि उनके मज़हबी लोगों ने यह समझ लिया कि यह अच्छा काम नहीं है कि इन्सान यह सब भी करे, लिहाज़ा उन्होंने इस पर सिरे से पाबन्दियां लगाईं और यहां तक कह दिया कि औरत को देखना भी गोया जुर्म है, हत्ता की मां और बहने और जो सगे रिश्ते हैं उनको भी उन्होंने बिल्कुल पामाल कर दिया, ऐसे–ऐसे वाक़्यात हैं कि अक़्ल दंग रह जाती है, वह जंगलों में निकल गए और बड़े–बड़े गिरजे बना लिए, वहां रहने लगे और यह समझने लगे कि अगर औरत पर निगाह भी पड़ जाएगी तो धर्म नष्ट हो जाएगा, गोया मज़हब ख़राब और बर्बाद हो जाएगा, बेचारी मां ज़ाहिर है कि उसके लिए बेटा बेटा होता है, वह अपनी ममता में गई कि एक दफ़ा निगाह पड़ जाए और मैं अपने बेटे को देख लूं, लेकिन जब बेटे को पता चला तो वह अन्दर घुसता चला गया कि कहीं ग़लती से मां की निगाह न पड़ जाए, आदमी जब अपनी तरफ़ से चीज़ें ईजाद करता है और दीन व मज़हब में अपनी तजवीज़ शामिल करता है, तो फिर ज़ाहिर है कि वह खुद भटकता है और दूसरों को भी भटकाता है।

इस्लाम का मुतवाज़िन निज़ाम–ए–ज़िन्दगी:

इज्तिमाई व इन्फ़िरादी ज़िन्दगी में इस्लाम ने पूरा तवाज़ुन रखा है, इस्लाम में शादी की इजाज़त ही नहीं बल्कि हुक्म है, फ़रमाने नबवी है: ऐ नवजवानो! अगर तुम शादी कर सकते हो तो ज़रूर शादी करो।

हदीस में हुक्म क्यों दिया गया? ज़ाहिर है कि समाज को बुराइयों से बचाने के लिए दिया गया, अगर कोई यह समझता है कि गोया यह एक ऐसी चीज़ कही जा रही है जो बहुत अच्छी नहीं है तो वह नासमझी की बात है, अल्लाह ने इन्सान के अन्दर यह सलाहियत रखी है, इस सलाहियत का अगर सही इस्तेमाल किया जा रहा है तो यह इन्तिहाई बड़ा गुनाह है, हदीस में है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने एक मौक़े पर फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स अपनी बीवी से ताल्लुक़ क़ायम रखता है तो यह भी सदक़ा और सवाब का काम है। सहाबा ने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल! आदमी अपनी ज़रूरत पूरी कर रहा है तो क्या उसमें भी सवाब मिलेगा? फ़रमाया: अगर वह ज़रूरत ग़लत तरीक़े पर पूरी करता है तो गुनाह होता? सहाबा ने अर्ज़ किया: बेशक गुनाह होता, फिर आप स0अ0व0 ने फ़रमाया: ज बवह सही तरीक़े पर अपनी ज़रूरत पूरी कर रहा है तो उसके लिए अज्र है।

अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ और उसके नबी स0अ0व0 की सुन्नत समझकर आदमी निकाह करता है तो, अपनी बीवी से ताल्लुक़ क़ायम करता है, लिहाज़ा यह सवाब का काम है, और यह तवाज़ुन सिर्फ़ इस्लाम में है, यह किसी दूसरे मज़हब में नहीं मिलता।

दुनिया को इस्लामिज़्म की ज़रूरत

मौलाना मुहम्मद नाज़िम नदवी

आजकल बड़े ज़ोर शोर से भारत में साम्प्रदायिक तत्व ये प्रोपगन्डा कर रहे हैं कि इस्लाम और उसके मानने वाले दूसरे धर्म वालों को बर्दाश्त करने के रवादार नहीं। इसीलिये घर वापसी के विषय से भारतीय मुसलमानों और दूसरे अल्पसंख्यकों के धर्म परिवर्तन की एक असंवैधानिक मुहिम जारी है और भारतीय समाज के सुख व शांति को समाप्त किया जा रहा है। हालांकि यह एक गुमराह करने वाली बात है। इसका वास्तविकता से कोई संबंध नही। यह इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करने की अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र का एक भाग है। बात ये है कि इस्लाम रहमत का दीन है। उसकी रहमत व मुहब्बत का दामन सारी मानवता के लिये व्यापक है। इस्लाम ने अपने मानने वालों को सख़्त हिदायत दी है कि वे दूसरी क़ौमों व धर्मवालों के साथ समानता, हमदर्दी, दुख बांटने व भाइचारे का मामला करें और इस्लामी राज्य में उनके साथ किसी भी प्रकार की ज़्यादती, भेदभाव व किसी भी प्रकार का अन्तर न किया जाये। उनकी जान व माल, इज़्ज़त व आबरू, माल व जायदाद और मानवाधिकारों की सुरक्षा की जाये। कुरआन पाक का इरशाद है: "अल्लाह तुमको मना नहीं करता उन लोगों से जो लड़े नहीं दीन के सिलसिले में और निकाला नहीं तुमको तुम्हारे घरों से और उनके साथ करो भलाई व इन्साफ़ का सुलूक, बेशक अल्लाह चाहता है इन्साफ़ वालों को।" (सूरह मुमतहिन्ना: 8) इस आयत की तफ़सीर में हज़रत अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह0 लिखते हैं कि: "मक्का में कुछ लोग ऐसे भी थे जो मुसलमान न हुए और मुसलमान होने वालों से कोई ज़िद और बैर भी नहीं रखा और न दीन के मामले में उनसे लड़े, न उनको सताने में और निकालने में ज़ालिमों का साथ दिया, इस तरह के ग़ैर मुस्लिमों के साथ भलाई से पेश आने को इस्लाम नहीं रोकता। जब वे तुम्हारे साथ नर्मी और भाईचारे से पेश आते हैं तो न्याय यही है कि तुम भी उनके साथ अच्छा बर्ताव करो और दुनिया को दिखला दो कि इस्लाम में व्यवहार का स्तर कितना श्रेष्ठ है। इस्लाम की शिक्षा ये नहीं कि अगर ग़ैर मुस्लिमों की एक क़ौम मुसलमानों से लड़ती झगड़ती नहीं है तो भी मुसलमान सभी ग़ैर मुस्लिमों को एक ही लाठी से हकेलना शुरू कर दें। ऐसा करना शासन व न्याय के विपरीत होगा।

दूसरे धर्म वालों के साथ सहयोग व असहयोग का इस्लामी नियम यही है कि उनके साथ मिलेजुले सामाजिक व राष्ट्रीय समस्याओं जिनमें शरई दृष्टिकोण से सहयोग करने में कोई मनाही न हो तो उनमें उनका साथ देना चाहिये।

दूसरे धर्मों या क़ौमों के कुछ लोग अगर मुसलमानों से सख़्त नफ़रत व दुश्मनी रखते हैं तो भी इस्लाम ने उनके साथ भाईचारगी की शिक्षा दी है। अल्लाह तआला का इरशाद है: "बदी का बदला नेकी से दो फिर जिस शख़्स के साथ तुम्हारी दुश्मनी है वह तुम्हारा सहयोगी बन जायेगा।" (सूरह फ़ुस्सिलतः 24)

भारत का वर्तमान सामाजिक व आर्थिक माहौल ऐसा बनाया जा रहा है जिसमें धर्मों में परस्पर नफ़रत की भावना को बढ़ावा दिया जा रहा है। एक दूसरे के धार्मिक व संवैधानिक अधिकारों पर डाका डाला जा रहा है। सत्ता के ज़ोर पर धर्म परिवर्तन करने पर मजबूर किया जा रहा है और सरासर संवैधानिक अधिकारों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। इस्लाम की स्वाभाविक शिक्षा ऐसे हालात में यही है कि तुम्हारे धर्म और तुम्हारी धार्मिक पहचान से घृणा करने वाले जो लोग हैं उनकी भ्रांतियां दूर की जाएं। इस्लामी शिक्षा से उनको परिचित कराया जाए। उनको बताया जाये कि इस्लाम अमन व शांति व कृपा का संदेशवाहक है। इसकी शिक्षाओं में पूरी मानवता के लिए सुख व शांति है। इस्लाम किसी वर्ग विशेष या जमाअत विशेष के लिये मार्गदर्शन नहीं करता है बल्कि उसके दामन में पूरी मानवता को सुकून मिलेगा।

आज जो ये हालात पैदा हुए हैं और हो रहे हैं इसमें बहुत बड़ा कारण इस बात का है कि इस्लाम की सही और

सच्ची तस्वीर हम मुसलमान दूसरों के सामने नहीं प्रस्तुत कर पा रहे हैं और इसका प्रयास भी नहीं हो रहा है। यदि इस ओर क़दम उठाया जाये और इस समय इस्लाम के प्रचार व प्रसार के विषय से इसको कर्तव्य के तौर पर अपनाया जाए तो यक़ीन है देश के दूसरे भाइयों की भ्रांतियां अवश्य दूर होंगी और उनकी दुश्मनी में अवश्य कमी आयेगी।

हमारी धार्मिक पहचान में एक बहुत बड़ी चीज़ पांच वक़्त की नमाज़ों के लिये अज़ान है। पूरे देश के लगभग सभी क्षेत्रों में (जहां दो चार घर भी मुसलमानों के हैं) अज़ान दी जाती है। ग़ैर मुस्लिम भाई इससे भय महसूस करते हैं। जिहालत और हमारी ग़फ़लत के कारण अधिकतर लोगों के ज़हन में ये बात है कि "मुसलमान अज़ान के ज़रिये मुग़ल बादशाह अकबर को याद करते हैं।"

आवश्यकता इस बात की है कि अज़ान का अर्थ एवं उसका संदेश उन्हें उनकी ज़बान में समझाने का प्रयास किया जाये। उनको बताया जाये कि यद्यपि ये इस्लामी पहचान है लेकिन अगर इसके अर्थ को देखा जाये तो सरासर हम सबके पैदा करने वाले और सबको पालने वाले परवरदिगार की बड़ाई का ऐलान है। जिस ज़ात ने हम सबको पैदा किया फिर जीवन व्यतीत करने के लिये सारी सुविधांए उपलब्ध करायीं, अक़्ल व समझदारी की बात तो यही है कि पूजा और इबादत और बन्दगी केवल उसी की होनी चाहिये। इस अज़ान में इसी बात का स्वीकार्य है। इन्सानों की हिदायत और दुनिया व आख़िरत मे सुकून और चैन का जीवन मिले इसी क्रम की शिक्षा और आदेशों को लेकर अल्लाह की ओर से जिस पवित्र व्यक्ति को दुनिया में भेजा गया उसकी रिसालत व नुबूव्वत की शहादत व गवाही उस अज़ान में है। दुनिया व आख़िरत की भलाई व कामयाबी उसी पालनहार और अस्ल माबूद के बताए हुए इबादत के तरीक़े में है। अज़ान में उसी इबादत की तरीक़े की ओर बुलाया जाता है और दुनिया को रोज़ाना पांच वक़्त यही सब याद दिलाया जाता है।

अस्ल माबूद को सबसे बड़ा मानना, उसी को अस्ल माबूद जानना, इन्सानों की भलाई के लिये उसके भेजे हुए पैग़म्बर व रसूल व अवतार की रिसालत व नुबूव्वत की गवाही देना, दुनिया व आख़िरत की भलाई व सफ़लता वाले इबादत के तरीक़े की ओर लोगों को बुलाना, यही तो अज़ान का खुलासा है। यदि सही रूप से इसकी व्याख्या की जाए, इसके अर्थ को बताया जाए तो यक़ीनन जो इससे भयभीत होते हैं वे भी इन शब्दों के सुनने वाले बन जाएंगे। आपसी नफ़रत समाप्त हो जायेगी।

लेकिन इसके लिये ज़रूरी है कि हम मुसलमान पहले ख़ुद अज़ान के अर्थ को जाने और उसकी मांग से परिचित हों। हम पहले ख़ुद ये जान लें कि अज़ान की बरकतें क्या हैं? दुनिया में उसके क्या फ़ायदे हैं? अज़ान का प्रभाव क्या है? अफ़सोस की बात है कि हम दावत वाली उम्मत होकर भी अज़ान तक के अर्थ से परिचित नहीं हैं तो इस्लाम की दूसरी पहचानों के बारे में हमारा क्या हाल होगा?

भारत के वर्तमान हालात में इस बात की अत्यधिक आवश्यकता है कि आपसी सहयोग का वातावरण उत्पन्न किया जाए। ग़ैर मुस्लिम भाइयों को अपने से क़रीब किया जाए। इस्लामी शिक्षाओं की उनकी भाषा में व्याख्या की जाए ताकि इस्लाम की स्वाभाविक शिक्षाओं को ये लोग जानें और उनका भय और उनकी नफ़रत समाप्त हो। और ये उसी समय संभव है जब हम स्वयं अपने धर्म एवं उसकी शिक्षाओं का ज्ञान रखेंगे। उनको सीखने और स्वयं पर लागू करने का प्रयास करेंगे।

(पेज 8 का शेष)....

विनम्रता का महत्व

अपने काम पर तुम्हें शर्मिन्दगी भी नहीं। ख़ुद रसूले अकरम स0अ0 के ताल्लुक़ से भी तुम्हारे वही ख़बीस इरादे हैं कि मौक़ा मिलने पर तुम अपना काम कर जाने की शदीद ख़्वाहिश रखते हो। यही चीज़ अमलन भी पेश आयी। बनू नज़ीर की बस्ती में एक वाक़्या आंहज़रत स0अ0 का एक ख़ास मुआमिले में जाना हुआ। तो ऊपर से आप पर चक्की का पाट गिराने की साज़िश रची गई, आप स0अ0 को वही से मालूम हुआ, फ़ौरन वहां से हट गये। ख़ैबर की फ़तेह के बाद आप स0अ0 की एक यहूद औरत ने दावत की, और सालन व गोश्त में निहायत सरीउलअस्र ज़हर मिलाया। आप स0अ0 अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से महफ़ूज़ रहे। उन्हीं यहूद ने आप पर जादू किया, अल्लाह ने मऊज़तीन नाज़िल फ़रमाकर आपको उससे रिहाई फ़लाई, साबिक़ा यहूद जिस रविश पर चल रहे थे ज़माना–ए–नुबूव्वत के यहूद उससे एक इंच भी पीछे नहीं थे, बल्कि यह कहा जाए तो ग़लत न होगा कि उनसे दो हाथ आगे ही थे।

ज़कात – इस्लाम का एक अहम हिस्सा

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

बच्चों की शादी के लिए रखे गए ज़ेवरात पर ज़कातः

बहुत से लोग बच्चों की शादी के लिए काफ़ी पहले से ज़ेवरात रख लेते हैं, तो अगर उन ज़ेवरात का मालिक बच्चों को बना दिया है तो जब तक वह नाबालिग़ हैं, उन ज़ेवरात की ज़कात वाजिब नहीं होगी और बालिग़ होने के बाद अगर ज़कात की शराएत पूरी हो रही हों यानि वह ज़ेवरात निसाब तक पहुंच रहे हों तो साल गुज़रने पर उनकी ज़कात वाजिब होगी और अगर बच्चों को मालिक नहीं बनाया तो उनकी ज़कात हमेशा गुज़िश्ता ज़ाब्तों के मुताबिक़ जिसने ज़ेवरात रखे हैं और जो मालिक है उस पर वाजिब होगी। (हिन्दियाः 1/172)

औरत के मेहर की ज़कातः

औरत का मेहर जब तक उसके क़ब्ज़े मे न आ जाए उस वक़्त तक उसकी ज़कात वाजिब नहीं है, क़ब्ज़े में आने के बाद उसका हिसाब शुरू होगा।

(हिन्दियाः 172)

औरत के पास जो ज़ेवरात हैं उनकी ज़कात किस पर हैः

औरत को उसके मैके से जो ज़ेवरात मिलते हैं उनकी मालिक औरत होती है और जो ज़ेवरात शौहर या उसके घरवालों की तरफ़ से तोहफ़े और हिबा की सराहत करके दिए जाएं उनकी भी मालिक औरत है और जिन ज़ेवरात को शौहर के घर से बग़ैर किसी वज़ाहत के दिया जाए, अगर उर्फ़ यह हो कि तलाक़ वग़ैरह की नौबत आने पर उनको वापस लिया जाता है तो उनका मालिक शौहर होगा और अगर वापसी का उर्फ़ न हो तो उनको भी हिबा माना जाएगा और उनकी भी मालिक औरत होगी, जिन ज़ेवरात की औरत मालिक है वह निसाब तक पहुंच रहे हों तो उनकी ज़कात औरत पर हुई, शौहर उसकी तरफ़ से अदा कर दे तो अदा हो जाएगी, लेकिन शौहर को ज़ेवरात की ज़कात की अदायगी पर मजबूर नहीं किया जा सकता, अगर शौहर ज़कात अदा न करे और औरत के पास ज़कात की अदायगी के लिए पैसे न हों तो औरत उन्हीं ज़ेवरात से हब्से ज़ाब्ता यानि चालीसवां हिस्सा ज़कात अदा करे, या कोई ज़ेवर बेचकर उससे अदा करे, और जिन ज़ेवरात का मालिक शौहर है, अगर वह निसाब तक पहुंच रहे हों तो उनकी ज़कात शौहर के ज़िम्मे होगी।

(शामीः 1/4–5)

सोने–चांदी की ज़कात किस क़ीमत के एतबार से होगी?

सोने–चांदी की ख़रीद और फ़रोख़्त की क़ीमत अलग–अलग होती है, ख़रीद की क़ीमत बढ़ी हुई होती है और फ़रोख़्त करने जाएं तो सोनार कुछ पर्सेन्ट काटकर क़ीमत लगाते हैं तो ज़कात अदा करते वक़्त उसकी फ़रोख़्त की क़ीमत का हिसाब करके चालीसवां हिस्सा या ढ़ाई पर्सेन्ट निकाला जाएगा, इसलिए कि ज़कात अस्लन ज़ेवर के चालीसवें हिस्से पर है, यानि चालीस ग्राम पर एक ग्राम और उसकी मार्केट में वही फ़रोख़्त वाली क़ीमत है।

(शामीः 2/331)

साल गुज़रने के बाद माल का हलाक या चोरी हो जानाः

अगर किसी शख़्स के पास निसाब के बराबर माल था, लेकिन साल गुज़रा भी नहीं था कि वह चोरी हो गया या सैलाब वग़ैरह जैसी किसी आफ़ते अर्ज़ी व समावी की वजह से ज़ाया हो गया तो उसकी ज़कात वाजिब नहीं होगी और साल गुज़रने के बाद माल चोरी या ज़ाया हो गया तब भी ज़कात माफ़ हो जाएगी, कुल माल ज़ाया हुआ हो तो कुल माल की और कुछ ज़ाया हुआ हो तो सिर्फ़ ज़ाया होने वाले माल की।

इसके बरख़िलाफ़ साल पूरा होने के बाद अगर उसने जानबूझकर माल ज़ाया कर दिया तो

ज़कात माफ़ नहीं होगी और बतौरे देन उसके ज़िम्मे बाक़ी रहेगी। (हिन्दियाः 1/180)

दरमियान साल में कमी–बेशीः

अगर दरमियान साल में कुछ कमी हो जाए, लेकिन साल की शुरूआत और ख़ात्मे पर वह निसाब के बक़द्र है तो ज़कात वाजिब होगी।

अगर किसी के पास सोना–चांदी या रुपया पैसा बक़द्र निसाब हो, फिर दरमियान साल में इतना इज़ाफ़ा हो जाए तो इज़ाफ़ा शुदा माल का साल अलग से शुमान नहीं होगा, बल्कि जब पहले से मौजूद माल का साल पूरा होगा तो उस इज़ाफ़ा शुदा माल का भी पूरा इक़रार दिया जाएगा, लेकिन इज़ाफ़ा साल गुज़रने के बाद हो तो उसका शुमार अगले साल किया जाएगा और अगर निसाब के बराबर माल नहीं था तो इज़ाफ़ा होने पर जिस वक़्त से वह निसाब के बराबर हुआ, उस वक़्त से साल जोड़ा जाएगा।

(हिन्दियाः 1/175)

ज़कात की पेशगी अदायगीः

अगर कोई शख़्स साहिबे निसाब है तो साल मुकम्मल होने से पहले भी वह ज़कात की अदायगी कर सकता है, जैसेः उसका साल ज़िलहिज्जा में पूरा होगा, लेकिन वह चाहता है कि रमज़ानुल मुबारक में ही ज़कात अदा करें ताकि रमज़ान की बरकत से अज्र–सवाब में इज़ाफ़ा हो जाए, या कोई ग़रीब और नादार उसको सख़्त हाजत की हालत में नज़र आया और वह चाहता है कि साल पूरा होने से पहले ही ज़कात की रक़म से उसकी मदद करें तो ऐसा करना जाएज़ है और साल पूरा होने पर जितनी ज़कात पहले निकाल चुका है उसकी अदायगी वाजिब नहीं होगी, इसी तरह अगर कोई शख़्स साहिबे निसाब है तो वह कई साल की ज़कात भी निकाल सकता है और अगर एक ख़ास मिक़दार में माल का मालिक है और समझता है कि साल गुज़रने से पहले ज़्यादा का मालिक हो जाएगा, लिहाज़ा ज़ाएद की ज़कात निकाल देता है तो अगर वाक़ई माल में इज़ाफ़ा हो गया तो उसकी ज़कात शरई एतबार से मान ली जाएगी, लेकिन अगर इज़ाफ़ा नहीं हुआ तो यह नफ़ली सदक़ा होगा और अगर साहिबे निसाब नहीं है तो पेशगी ज़कात अदा करने से ज़कात में शामिल नहीं होगी, इसीलिए अदा करने के बाद साहिबे निसाब हो गया तो जो कुछ पहले निकाला था, उसको ज़कात में नहीं जोड़ सकता। (हिन्दियाः 1/176)

ज़कात की अदायगी के वक़्त नियत शर्त हैः

ज़कात उसी सूरत में अदा होगी जब देते वक़्त ज़कात की नियत हो। इसलिए अगर किसी मोहताज की मदद की, लेकिन देते वक़्त ज़कात की नियत नहीं थी, बाद में ख़्याल आया कि क्यों न इसमें ज़कात की नियत कर लें तो देखा जाए, अगर वह मोहताज उस रक़म को ख़र्च कर चुका हो तो अब उसमें ज़कात की नियत नहीं की जा सकती है, लेकिन अगर पता चल जाए कि अभी उसने रक़म ख़र्च नहीं की है तो अब भी ज़कात की नियत कर लेने से ज़कात अदा हो जाएगी और अगर ज़कात का हिसाब करके ज़कात की रक़म अलग रख ली कि इसमें से हाजतमंदों को देते रहेंगे तो अब अगर देते वक़्त ज़कात की नियत न भी रही तब भी ज़कात अदा हो जाएगी, लेकिन यह अलग रखा हुआ माल अगर ज़ाया हो जाए तो ज़कात अलग से अदा करनी होगी।

(शामीः 2/11–13)

ज़कात की अदायगी सामान सेः

जिस चीज़ की ज़कात अदा कर रहा है, उसी के चालीसवें हिस्से का देना ज़रूरी नहीं है, बल्कि उसकी क़ीमत देना न सिर्फ़ जाएज़ बल्कि फ़ुक़्हा के नज़दीक अफ़ज़ल है और अगर इस क़ीमत से कोई सामान ख़रीदकर दे दे तो उसमें भी कोई हर्ज नहीं है।

सोफ़रा का ज़कात के रुपये तब्दली करनाः

मदरसे का सफ़ीर या मालिक का वकील अमीन होता है और जिसके पास अमानत हो उसके लिए अस्लन उसमें तब्दीली करना सही नहीं होता है, लेकिन अगर ज़रूरत हो तो नोट बदलने और तुड़ाने की भी गुंजाइश है, क्योंकि ज़कात में रूपये तय नहीं होते, बल्कि अस्ल में मालियत तय होती है।

(किताबुल मसाएलः 2/154)

भूख और ख़ौफ़

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब अल्लाह की इबादत के लिए घर बनाया तो पूरे मक्का शहर के लिए अमन और बहुत हद तक ख़ुशहाली की दुआ फ़रमाई, इरशादे इलाही हैः

"याद रखने के लाएक़ है वह वक़्त जब इब्राहीम ने कहा; मेरे रब! इसे अमन वाला शहर बना दे और यहां के लोगों को फलों में रिज़्क़ अता फ़रमा उनको जो उनमें अल्लाह पर ईमान रखें और आख़िरत के दिन पर, (इरशाद हुआ) जो कुफ़्र करेगा उसे (भी) मैं थोड़ी मुद्दत तक फ़ायदा दूंगा, फिर उसे आग के अज़ाब की तरफ़ खींच ले जाऊंगा और वह बुरा ठिकाना है।" (सूरह बक़राः 126)

भूख और ख़ौफ़ यह दो ऐसी चीज़ें हैं जिनके होते हुए इन्सान किसी सूरत अपनी सलाहियतों को बरूए कार नहीं ला सकता, एक घर के मामूली निज़ाम से लेकर आलमी बैनुलअक़वामी निज़ाम को दुरुस्त रखने के लिए ख़ौफ़ और भूख से मामून होना ज़रूरी है। उमरानियात का यह मुसल्लम उसूल है कि जो हुकूमत अपनी रिआया के लिए भूख और ख़ौफ़ से हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम नहीं कर सकती, वह लाख तरक़्क़ी के बावजूद कभी फ़लाही रियासत का दर्जा हासिल नहीं कर सकती, न ही रिआया की नज़र में वक़ार और एतबार पा सकती है। दूसरे इस दुआ से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने यह भी पैग़ाम दिया कि अल्लाह की मस्जिदों को हर क़िस्म के झगड़ों और लड़ाइयों से पाक रखना बेहद ज़रूरी है, इबादते इलाही सुकून से अदा करने का अमल है, बेचैनी के साथ नहीं, रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमायाः

(जब नमाज़ क़ायम हो तो भागते दौड़ते न आओ, तुम इस हाल में आओ कि तुम पर सुकून की कैफ़ियत छाई हुई हो, फिर नमाज़ का जितना हिस्सा मिले वह अदा करो, जो हिस्सा छूट जाए उसे बाद में पूरा कर लो) (मुत्तफ़क़ अलैहि)

यानि सलातुल ख़ौफ़ के एहकाम हंगामी वक़्त के एहकाम हैं, जब मुकम्मल इत्मिनान हो जाए तो फिर नमाज़ को मुकम्मल क़ायम करो। जो लोग मस्जिदों में आए दिन झगड़ते रहते हैं उनके लिए यह आयत पैग़ाम रखती है कि उनका यह तर्ज़े अमल अक़ामते सलात में रुकावट पैदा करता है, लिहाज़ा वह मस्जिद के आबाद करने वाले नहीं, बल्कि उसकी हुरमत को पामाल करने वाले हैं, इसी तरह लोगों को ख़ौफ़ और भूख से महफ़ूज़ रखना अहले इस्लाम की नुमायां शिनाख़्त और उनकी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी भी है, लोगों में ख़ौफ़ व डर पैदा करना और उनकी भूख को ख़त्म न करना कुफ़्र की निशानी और काफ़िराना अमल क़रार दिया गया हैः

"क्या आपने इस देखा (कि कितना ग़लीज़ शख़्स है) जो जज़ा और सज़ा (यानि क़यामत) को झुठलाता है, यही तो है जो यतीमों को धक्के देता है और मिस्कीन को खाना खिलाने पर आमादा नहीं करता।"

यतीम को धक्के देना उस पर ख़ौफ़ मुसल्लत रखना है और उसे खाना खिलाने पर आमादा न करना उसे भूखा मारना है और यह काम क़यामत को झुठलाने वालों से हो सकते हैं, अल्लाह के सामने हाज़िरी का यक़ीन रखने वालों से नहीं हो सकते हैं, रसूलुल्लाह (स0अ0व0) जब हिजरत फ़रमाकर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो उमूमी तौर पर सहाबा को उन कामों की तरफ़ तवज्जो दिलाई ताकि इस्लामी इज्तिमाई ज़िन्दगी का पूरा नक़्शा उनके सामने रहे, इरशाद फ़रमायाः

(लोगो! सलाम को आम करो, खाना खिलाओ, सिलारहमी करो, रातों को नमाज़ें पढ़ो, जबकि लोग सो रहे हों, सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल होगे)

सलाम को आम करना यह पुरअमन माहौल बनाना है, खाना खिलाना यह भूख का ख़ात्मा करना है, सिला रहमी करना यह दोनों कामों को एक साथ करना है, रातों को नमाज़ें पढ़ना यह इबादते इलाही है जो अस्ल मक़सूद है, मज़ीद इसकी तरफ़ इशारा है कि पुरअम्न कैफ़ियत को क़ायम करके अल्लाह की ख़ूब इबादत की जाए, "वन्नासि नियाम" इसमें एक आम हुक्म तो यह है कि लोग जब नींद के मज़े ले रहे हों उस वक़्त तुम अल्लाह की इबादत करो और अल्लाह के इन्तिहाई पसंदीदा बन्दे बन जाओ, दूसरी तरफ़ इसका यह भी लतीफ़ इशारा है कि तुम अमन व सलामती को आम करके लोगों की भूख को मिटाकर ऐसा माहौल भी फ़राहम करो कि लोग चैन की नींद सो सकें। वरना ख़ौफ़ और भूख की हालत में वह इत्मिनान की नींद कहां से पा सकेंगे, अमन और ख़ुशहाली अल्लाह की इबादत के लिए मतलूब है, अगर उनको नाफ़रमानी का ज़रिया बनाया जाए तो यह नेमतें अल्लाह की तरफ़ से छीन ली जा सकती हैं, इसीलिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस दुआ के फ़ौरन बाद यह भी दुआ फ़रमाई कि मुझे और मेरी औलाद को हमेशा बुतों की इबादत से बचाए रखना, वरना ख़ाली अमन व ख़ुशहाली से कुछ हासिल होने वाला नहीं, यह दुआ तफ़सीली तौर पर सूरह इब्राहीम में मौजूद है:

"जब इब्राहीम ने कहा कि बारे इलाहा! इस शहर को अमन वाला बना और मुझे और मेरी औलाद को बुतों की इबादत से हमेशा महफ़ूज़ रख।"

अमन और ख़ुशहाली ज़रिया है इबादते इलाही का, अगर कोई उन ही को मक़सूद समझकर अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हो जाए तो यह नेमतें छीन ली जा सकती हैं, इरशादे इलाही है:

"अल्लाह एक इलाक़े की मिसाल पेश करता है जो निहायत मामून व मुतमईन था, उसका रिज़्क़ हर जगह से फ़रावानी के साथ उसे पहुंचा करता था, उस इलाक़े ने अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री की, तो अल्लाह ने उसे भूख का लिबास पहनाया और ख़ौफ़ का मज़ा चखाया, उन कामों की वजह से जो वह किया करते थे।"

मक्का बेआब व ग्याह वादी थी, जहां कोई चीज़ उगती न थी, अल्लाह की शान कि उसने बेआब व ग्याह वादी को अपना सबसे पसंदीदा मक़ाम बनाया, वहां की मईशत के लिए ज़रूरी था कि दुनिया भर से खाने पीने का सामान वहां पहुंचे, हज़रत इब्राहीम ने अहले मक्का के लिए हर तरह के फलों की दुआ फ़रमाई, जब मेवों के लिए दुआ हुई जो कि लुत्फ़ उठाने के लिए खाए जाते हैं तो ख़ुद–बख़ुद उस दुआ में अशिया ख़ुर्द व नोश का ज़िक्र आ गया जो भूख मिटाने के लिए खाई जाती हैं, लिहाज़ा आपकी दुआ हर क़िस्म की खाने–पीने की चीज़ों से मुताल्लिक़ हुई।

दुआ में हुस्ने अदब को पेश रखा गया है, मन्सबे अमानत के ताल्लुक़ से जब अल्लाह का यह फ़रमान सुना कि मेरा अहद ज़ालिमों को हासिल होने वाला नही तो रिज़्क़ के ताल्लुक़ से भी यह ख़्याल गुज़रा कि शायद नाफ़रमानों पर रिज़्क़ के दरवाज़े बन्द हों, इसलिए दुआ में ईमान वालों का ज़िक्र किया कि कहीं उमूमी तौर पर सबके लिए रिज़्क़ की दुआ शायद अल्लाह को पसंद न आए, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जवाब में यह बात इरशाद फ़रमायी कि रिज़्क़ तो काफ़िरों को भी मिलेगा, लेकिन उसके साथ अल्लाह की रज़ामन्दी नहीं होगी, हज़रत इब्राहीम की दुआ का असर था कि हज़ारों साल से अहले मक्का को फ़रावानी से रिज़्क़ मिल रहा है, हालांकि वह पूरा इलाक़ा बेआब व ग्याह है, हालांकि सब्ज़ा नहीं उगता, न खेती की जा सकती है, लेकिन अल्लाह ने महज़ अपनी इबादतों की बरकत से उस पूरे ख़ित्ते को मालामाल रखा, अब इस आख़िरी दौर में तो और ज़्यादा फ़रावानी नज़र आ रही है, अल्लाह नज़रे बद से बचाए और वहां के बाशिन्दों को सही शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

आजादी के बाद हमारा हाल

मुफ्ती महफूज रहमान उस्मानी

अंतिम संदेशष्टा मोहम्मद सल्लल्लाहो वाले वसल्लम का कथन है:

"वह समय निकट आता है जब तमाम काफिर को में तुम्हें मिटाने के लिए मिलकर षड्यंत्र करेंगी और एक दूसरे को इस तरह बुलाएंगे जैसे जैसे भोज में स्वादिष्ट पकवानों की ओर एक दूसरे को बुलाते हैं। किसी ने पूछारू अल्लाह के रसूल! क्या हमारी कम संख्या के कारण से हमारे यह हाल होगा? कहा नहीं, बल्कि तुम उस समय संख्या में बहुत होगे, यद्यपि तुम समंदर की आग की तरह नकारा होगे। निसंदेह अल्लाह ताला तुम्हारे दुश्मनों के दिल से तुम्हारा डरो दबदबा निकाल देंगे और तुम्हारे दिलों में बुजदिल ही डाल देंगे किसी ने पूछा अल्लाह के रसूल बिजली का क्या अर्थ है बताया दुनिया की मोहब्बत और मौत से नफरत।"

इस समय दुनिया भर में मुसलमान का विलय रहेम हालत में जीवन बसर करने पर मजबूर हैं। प्यारे देश भारत समेत जहां भी मुसलमान हैं चाहे वे अल्पसंख्यक या बहुसंख्यक किसी ना किसी बहाने से उन पर अत्याचार के पहाड़ तोड़े जा रहे हैं अब हालत यह है कि मुसलमान जिस अदर जुल्म की चक्की में पिस रहे हैं शायद ही किसी दूसरी ओम पर कभी ऐसा समय आया हो?

इस्लाम के दुश्मन व विरोधी यहूदी व नसरानी और कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन एकत्र होकर मुसलमानों के खिलाफ षड्यंत्र कर रहे हैं है रतवा आश्चर्य की बात यह है कि हम सब कुछ जानते हुए भी उनके षड्यंत्र का शिकार बनते जा रहे हैं अगर हम आज भी एक हो जाएं धर्म को मसलक पर वरीयता दें और अल्लाह के कलमे के आधार पर एक झंडे के नीचे जमा हो जाए तो कोई भी साजिश और इस्लाम विरोधी मंसूबे कदापि सफल नहीं होंगे। यह बात भी ध्यान में रखने योग्य है कि अल्लाह ताला की मदद भी उसी सूरत में प्राप्त होगी जब हमारी जिंदगी दिन और शरीयत के अनुसार व्यतीत हो रही होगी धर्म तथा दिन से दूर और अलग रहते हुए अल्लाह की मदद की उम्मीद रखना बेकार है।

मुसलमानों के लिए अल्लाह ताला की मदद का वादा जरूर है लेकिन साथ ही अल्लाह के मदद आने के लिए यह शर्त भी है किय

अगर तुम अल्लाह के दीन की मदद करोगे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेंगे और तुम्हारे कदमों को जमा देंगे।

जब से मुसलमानों ने अल्लाह ताला के दीन की मदद छोड़ दी है अल्लाह ताला ने भी मुसलमानों से अपनी रहमत तथा मदद का हाथ उठा लिया है अतः आज हर और मुसलमानों पर यहूदियों तथा नस रानियों का हमला है आवश्यकता इस बात की है कि हम अल्लाह की रस्सी को मजबूती से थाम ले तथा एकत्र होकर सुनहरे उसूलों के तहत अपने जीवन व्यतीत करें तो अल्लाह ने चाहा तो सफलता यकीनी है।

हजरत अमीर दास असलम से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया नेक लोग एक के बाद एक जाते जाएंगे जैसे छटाई के बाद रद्दी या जो खजूरे बाकी रह जाती हैं ऐसे नाकारा लोग रह जाएंगे अल्लाह ताला उनकी कोई परवाह नहीं करेगा।

इस समय भारतीय मुसलमानों को अत्यधिक मुश्किलों का सामना है छोटे से लेकर बड़े पदों पर बैठे हुए हुकूमत तथा प्रशासन के लोगों में संगीत सोच तेजी से परवान चल रही है यही कारण है कि मर्ज बढ़ता गया ज्यों–ज्यों दवा की।

मुस्लिम नेता व संस्थाएं इस अवसर पर सर जोड़कर बैठे और बुद्धिजीवियों इत्तेफाक को 2 रन देसी का मिली सबूत देते हुए मुसलमानों के समस्याओं पर गंभीरता से सोच विचार नहीं बल्कि बाइज्जत कौन जो आज जिल्लत वापस थी और जुल्मों जबर इन्हें तात का शिकार है उनको आर्म गलत से निकालकर अमन व पद की राह पर चलाने के लिए मजबूत कार्यप्रणाली तैयार करें मिला तकरीर मसलक कलमा वाहिद की बुनियाद पर मुसलमानों को भी प्लेटफार्म पर जमा हो और मिल्लत के जुमला मसालों परेशानियों का हल तलाश करके इस्लाम के पैरों में अनुवाद ही काम करें और इस की रोशनी में हिंदुस्तान की तहजीब रीवा का पति देव आपकी आभारी करें कितनी बर्बादी मुकद्दर में थी आबादी के बाद क्या बताएं हम तो क्या गुजरी है आजादी के बाद।

सादगी का आला नमूना

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि0) मशहूर सहाबी हैं और अशरा–ए–मुबश्शरा में शामिल हैं, आपका शुमार अव्वलीन हल्क़ा–ए–बगोशाने इस्लाम में होता है, आपने पहले हब्शा हिजरत की और फिर हिजरत करके मदीना तैय्यबा पहुंचे जहां हज़रत साद बिन अर्रबीअ से उनकी मुआख़ात हुई और उन्होंने अपना सबकुछ उनके लिए कुर्बान कर देना चाहा, मगर उन्होंने कहा कि मुझे सिर्फ़ बाज़ार का रास्ता दिखा दो, मैं अपनी गुज़र का बन्दोबस्त खुद कर लूंगा, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि0) को तिजारत में बड़ी बरकत हासिल थी, इसीलिए उनको ताजिरुर्रहमान के लक़ब से भी याद किया जाता है, अहम ग़ज़्वात में आपने बड़े जज़्बे और पामर्दी का मुज़ाहिरा किया है। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की वफ़ात के बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ के दस्ते मुबारक पर बैत होने वालों में तीसरा हाथ आपही का था, वह हज़रत शेख़ैन (अबूबक्र रज़ि0, उमर रज़ि0) के ख़ास मुशीरों में भी थे। अल्लाह ने उनको इल्म व फ़ज़्ल का वाफ़िर हिस्सा अता फ़रमाया था, कई अहम मवाक़ेअ पर उन्हीं की राय पर अमल हुआ, उनको ख़ौफ़े खुदा और फ़िक्रे आख़िरत का जज़्बा बहुत ज़्यादा लाहक़ रहता था, इसीलिए माल व मनाल की उनकी निगाहों में कोई हैसियत न थी, ईसार और राहे खुदा में ख़र्च करने का ग़ैर मामूली जज़्बा मौजूद था। एक मर्तबा मदीना में एक तिजारती काफ़िला आया जो सात सौ ऊंटों पर मुश्तमिल था और उन गेहूं, चावल और खाने–पीने की दूसरी चीज़ें भी थीं, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि0) वह तमाम सामान यहां तक कि सवारी के कजावह को भी राहे खुदा में वक़्फ़ कर दिया, इसलिए कि हज़रत आयशा (रज़ि0) ने हुज़ूरे अकरम (स0अ0व0) की बशारत सुनाई थी कि अब्दुर्रहमान जन्नत में रेंगते हुए जाएंगे। ऐसे ग़ैर मामूली दौलतमंद होने के बावजूद उनकी ज़ाति ज़िन्दगी इन्तिहाई सादा और फ़क्र व फ़ाक़ा की थी, इसी तरह रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की तालीमात का इत्तेबा और आपकी ज़ात से मुहब्बत भी हद दर्जा थी।

मशहूर वाक़्या है कि एक मर्तबा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि0) हाज़िरे दरबारे रिसालत हुए तो आपके ऊपर कुछ ज़र्द निशानात लगे हुए थे, रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने पूछा तो बताया कि मेरी शादी हो चुकी है, यह उसी के निशानात हैं, रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने दुआए ख़ैर से नवाज़ा और इरशाद फ़रमाया कि तुम वलीमा ज़रूर करो, चाहे एक ही बकरी का क्यों न हो।

यह मुख़्तसर सा वाक़्या अल्फ़ाज़ के एतबार से बहुत ही कम है, मगर मानी के लिहाज़ से बहुत है, ग़ौर का मक़ाम है हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि0) एक जलीलुल क़द्र मुहाजिर सहाबी थे, रसूलुल्लाह (स0अ0व0) से दूर की रिश्तेदारी भी थी और उनकी कुल कायनात रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की ज़ाते अतहर ही थी, लेकिन अंदाज़ा करें कि इसके बावजूद भी उन्होंने अपनी शादी कैसी सादगी के साथ की होगी, जिसका इल्म खुद रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को ही न था, जबकि मदीना मुनव्वरा में उस वक़्त मुसलमानों की तादाद गिनी–चुनी ही थी, इस वाक़्ये में यह पहलू भी क़ाबिले उस्वा है कि जब रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को निकाह की ख़बर मिली, तो आपने किसी क़िस्म की नाराज़गी का इज़हार नहीं फ़रमाया, बल्कि दुआएं दी और सादगी के साथ वलीमे की बात कही।

बिलाशुब्हा शादी इन्सानी ज़िन्गदी की एक बड़ी ज़रूरत है और मुसलसल एक इबादत है, इन्सानी तहफ़्फ़ुज़ व बक़ा के लिए यह एक ज़रूरी अमल है, दीने इस्लाम में न सिर्फ़ इसकी तालीम बल्कि हुक्म मौजूद है, इरशादे नबवी है कि ऐ नवजवानों! तुममें से जो शादी कर सकता हो वह ज़रूर करे, शादी कैसी हो और शादी के बाद ज़िन्दगी कैसी गुज़ारी जाए, इस्लाम में इसकी तफ़सीलात और जुज़्वियात भी मौजूद हैं, रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमाया कि सबसे बाबरकत निकाह वह है जो सबसे कम ख़र्च वाला हो, एक मौक़े पर रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने हिदायत की कि निकाह मस्जिद ही में होना चाहिए और एक मौक़े पर यह भी फ़रमाया कि निकाह मेरी सुन्नत है।

नबवी तालीमात और उस्वा–ए–सहाबा को पेशे नज़र रखकर मौजूदा दौर की शादियों का जाएज़ा लिया जाए तो कोई मेल नज़र नहीं आता, बल्कि बेतहाशा इसराफ़, बेतकल्लुफ़ात, इस्लामी तालीमात से बेज़ारी का इज़हार और ला महदूद रुसूम और खुराफ़ात का एक तूफ़ाने बलाख़ेज़ दिखता है, जबकि शादियों को सादा बनाने की अशद ज़रूरत है और यही बाइसे बरकत है।

फ़तेह व ग़ल्बे का हक़ीक़ी सरचश्मा

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मारूफ़ मुस्तशिरकीन मैक्स मेहरूफ़ अपने तास्सुर को बयान करते हुए कहता है:

"हमारे लिए यह समझना तक़रीबन नामुमकिन है कि किस तरह मुख़्तलिफ़ क़बीलों में बंटे हुए अरबों ने जो ज़रूरी जंग के सामाने से भी महरूम थे इस मुख़्तसर सी मुद्दत में रोमियों और ईरानियों को शिकस्त दे दी जो अपनी तादाद और सामाने जंग में उनसे कई गुना ज़ाएद और फुनून–ए–हरब में माहिर थे और एक मुनज़्ज़म लश्कर की हैसियत से उनसे लड़ रहे थे।"

तज्ज़िया निगारों के नज़दीक तीन बुनियादी असबाब हैं जिनके ज़रिये हुकूमतें और फ़ौजें अपने हरीफ़ों पर फ़तेह और ग़ल्बा पाती हैं:?

1– तादाद की कसरत

2– जंगी साज़ व सामान

3– फ़ौजी तरबियत

अरब अपनी आबादी और रक़्बे के एतबार से बहुत कम थे, और जो जंगे उन्होंने रोमियों और ईरानियों से लड़ीं वह अपने इलाक़े से बाहर निकल कर लड़ीं, वतने अज़ीज़ से दूर, इस्लाम के मरकज़ से जुदा बिल्कुल मुसाफ़िराना हैसियत, जहां बड़ी दुश्वारी और लम्बे अर्से के बाद ही कुमुक पहुंच सकती थी, ऐसे में उनका सामाने ख़ोर व नोश और हथियारों की मदद वही थी जिसे वह अपने दुश्मन से छीन सकते थे। उसके बरअक्स उन्होंने जिन मोमालिक पर लश्कर कशी की थी वह निहायत ही ज़रखेज़ व शादाब मुल्क थे, दुश्मन फ़ौजों के जत्थे बादलों की तरह उमड़ते चले आ रहे थे और मुल्क के हर हिस्सो में उनको आसानी के साथ रसद पहुंचती थी। बिलफ़र्ज़ अगर पूरा जज़ीरतुल अरब भी ईरानियों और रोमियों के मुक़ाबले के लिए निकल आता जो गरचे अक़लन मुहाल है तब भी ईरान व रोम के मुक़ाबले जो दुनिया की आबादी का निस्फ़ हिस्सा थे उनकी कोई हैसियत न होती, हालांकि जो अरब उनसे जंग के लिए निकले थे उनकी मजमूई तादाद बीस फ़ीसद से भी ज़्यादा न थी।

तारीख़ी शहादतें मौजूद हैं कि मुसलमान और उनके हरीफ़ों की तमाम बड़ी और फ़ैसलाकुन जंगों में फ़रीक़ैन की तादाद में कोई तनासुब न था। रोमियों और ईरानियों की तादाद अक्सर जंगों में कई गुना ज़्यादा थी।

मुसलमानों की क़िल्लत और उनके दुश्मन ईरानियों और रोमियों की कसरत का एतराफ़ तमाम मोअर्रिख़ीन ने किया है, किसी एक मुअर्रिख़ ने भी मुसलमानों की फ़तेह के असबाब में "अददी फ़ौक़ियत" का ज़िक्र नहीं किया है।

जंगे यरमोक में मुसलमानों की तादाद ज़्यादा से ज़्यादा पंद्रह से पच्चीस हज़ार तक ज़िक्र की गई है, जबकि रोमियों की ताक़त एक लाख से भी ज़्यादा बयान की गई है।

क़रीब–क़रीब यही तनासुब जंगे क़ादसिया में मुसलमानों और ईरानियों के बीच में था, तादाद के इस अज़ीम तफ़ाउत के बावजूद इन जंगों का नतीजा मुस्लिम तारीख़ का सुनहरा बाब है।

रही बात साज़ व सामान की तो जंगी अस्लहों में अरबों की हालत और भी ज़्यादा कमज़ोर व पस्त और बेहैसियत थी, न वह मुनज़्ज़म लश्कर थे और न किसी हुकूमत के बातन्ख़्वाह फ़ौजी थे कि हुकूमत अपनी सतह पर अस्लहा वग़ैरह मुहैया करती और कील टांके से दुरुस्त करके मैदाने जंग में रवाना करती।

मुसलमानों की बेसर व सामानी, बोसीदा लिबास, फटे–पुराने जूते और उनके ज़ईफ़ व लाग़र घोड़ों को देखकर ईरान वाले मज़ाक़ उड़ाते थे और हैरान भी थे कि यह ख़स्ताहाल लोग किसी तरह इस अज़ीमुश्शान लश्कर का मुक़ाबला करेंगे जो हर तरह के हथियारों से लैस है!

जहां ताल्लुक़ है अरबों के जंगी निज़ाम और

अस्करी तरबियत का तो इससे इनकार नहीं कि वह जंग के ख़ूंगर थे, दिलेर व बहादुर थे और अपनी अना की ख़ातिर चालिस साल तक जंग की भट्टी में सुलगने को तैयार थे लेकिन उनकी यह सारी बहादुरियां आपस में ख़ानाजंगी तक ही महदूद थीं, रोम व ईरान से हमेशा ख़ाएफ़ रहते और अज़ीमुश्शान सल्तनत से टकराने की कभी जुर्रत न कर सकते थे, उनकी जंगी महारतों का दायरा बहुत ही महदूद था, वह हब्शा से शिकस्त खा चुके थे, ईरान के मुतीअ व फ़रमाबरदार हो चुके थे और जब अबरहा ने मक्का पर चढ़ाई की तो न सिर्फ़ बेबस होकर मक्का को ख़ाली कर दिया बल्कि ख़ाना–ए–ख़ुदा की हिफ़ाज़त से भी अपना दामन छुड़ा लिया।

अरब के बिलमुक़ाबिल रोम व ईरान का जंगी निज़ाम इस ज़माने में बहुत तरक़्क़ी याफ़्ता था, रोम की बाज़नतीनी हुकूमत सातवीं सदी में अपने उरूज को पहुंच चुकी थी, ईरान व रोम में जो जंगें हुईं, उनसे दोनों को बहुत कुछ तर्जुबात हुए, जंग के नए–नए तरीक़े मालूम हुए, अब ऐसे में यह ख़्याल करना कि अरब अपने क़बाइली जंगों की वजह से इतने मश्शाक़ और ताक़तवर हो गए थे कि उन्होंने रोम व ईरान की शहंशाहियत को शिकस्त दे दी निहायत ही ग़ैर माक़ूल बात है, क्योंकि अगर इस ख़्याल को सही मान लिया जाए कि अरबों की फ़ुतूहात का राज़ उनकी जंगी क़ाबिलियत है तो यह सवाल उठना यक़ीनी है कि इस्लाम की आमद से क़ब्ल उन्होंने अपने जज़ीरे से निकलने और दूसरों पर हमला करने की जुर्रत क्यों न की? बेसते नबवी (स0अ0व0) से पहले रोम व ईरान के सामने वह सीनासिपर क्यों न हुए? सदियों तक वह ईरान व रोम से लरज़ा व ख़ाएफ़ क्यों रहे?!

ईमान की ताक़त

अरबों की शानदारी फ़ुतूहात और तारीख़े इन्सानी के इस हैरतअंगेज़ इन्क़िलाब की वजह सिर्फ़ और सिर्फ़ वह ईमानी ताक़त है जिसने अरबों में एक नई रूह फूंक दी और उनके अन्दर एक नया जोश व वलवला पैदा कर दिया, वह पहले की तरह बेनज़्म और लामज़हब नहीं रहे, बल्कि वह एक ज़िन्दा मज़हब के हामिल और एक ज़बरदस्त कूव्वत के मालिक बन गए। अल्लाह के रसूल (स0अ0व0) ने उनकी ऐसी ईमानी तरबियत फ़रमायी कि उनकी दुनिया ही बदल गई, वह मअ अपने क़ुलूब के, मअ अपने हाथ–पांव के, मअ अपनी रूहों के इस्लाम के दामन से वाबस्ता हो गए।

उन्हें एहसास हुआ कि अल्लाह ने उन्हें इसलिए मबऊस किया है कि वह लोगों को तारीकियों से निकालकर रोशनी की तरफ़ लाएं, इन्सानों की बन्दगी से छुड़ाकर ख़ुदा की बन्दगी पर आमादा करें, उन्हें यक़ीन था कि अल्लाह ने ज़मीन का वारिस बनाया है।

ईमान की कूव्वत ने अरबों के ज़हनों में इन्क़िलाब बरपा कर दिया, वह दुनिया के लिए और दुनिया उनके लिए बिल्कुल बदल गई, जो दुनिया उनके लिए हैरत व इस्तअजाब का बाइस थी और जिसे वह ललचाई हुई नज़रों से देखा करते थे अब उनकी नज़रों में वह हक़ीर और बेमाया हो गई, जिन क़ौमों व जमाअतों को वह हमेशा इज़्ज़त व एहतराम और रश्क व ताज़ीम की नज़र से देखा करते थे, इन्सान की सूरत में जानवरों व चौपायों से ज़्यादा उनकी हैसियत न बची, उनकी ज़ाहिरी शान व शौकत, दुनियावी साज़ व सामान और उनका ठाठ व ज़ीनत सब हक़ीर हो गया।

अब तक इनकी ज़िन्दगियां बेमक़सद थीं, ईमान की दौलत ने उन्हें ज़िन्दगी का मक़सद अता किया, उनके दिल की गहराइयों में यह अक़ीदा पुख़्ता हो गया कि वह दुनिया के लिए नहीं बल्कि दुनिया उनके लिए बरपा की गई है और वह दीन के फ़रोग़ की जद्दोजहद और आम इन्सानों की हिदायत के लिए दुनिया में भेजे गए हैं।

ईमान की कूव्वत ने उनके अन्दर यह यक़ीन पैदा कर दिया कि ख़ुदा ही उनकी मदद का ज़ामिन है और उसने उनसे फ़तेह व नुसरत का वादा किया है और ख़ुदा का वादा कभी ग़लत नहीं हो सकता, उन्हें ख़ुदा और उसके रसूल पर पूरा ईमान था। क़िल्लत व कसरत का सवाल उनके लिए हैच हो गया, ख़तरात का ख़ौफ़ उनके दिलों से जाता रहा और उनके अन्दरून में ऐसी बेपनाह ताक़त पैदा हो गई कि कैसे ही नाख़ुशगवार और नामुआफ़िक़ हालात पेश उनके पाए सबात में कोई लग़्ज़िश न आती, उनके सुकून व इत्मिनान में कोई फ़र्क़ न पड़ता, तादाद और साज़ व सामान को वह बेहैसियत समझने लगे और असबाब की परस्तिश से बेनियाज़ हो गए। ईमान की इस अज़ीम की ताक़त के ज़रिए उन्होंने वह–वह कारनामे अंजाम दिए कि अगर तवातिर के साथ तारीख़ी शहादतें न होतीं तो उनकी हैसियत मनगढ़ंत कहानियों और तफ़रीही अफ़सानों से ज़्यादा न होती।

चमन बचाओ ग़म-ए-आशियां का वक़्त नहीं

"इस पुर आशूब दौर में भी जब कि हमारे दुश्मन ने हमें चारों तरफ़ से घेरा हुआ है, हम आपस में एक-दूसरे के साथ तरह-तरह की ख़ानाजंगी में मसरूफ़ हैं, जाह व इक़्तिदार के लिए आपस की लड़ाइयों का तो ज़िक्र क्या है, ख़ुद इल्मी और दीनी सतह पर हमारी बहुत सी क़ीमती तवानाइयां अस्ल दुश्मन का मुक़ाबला करने के बजाए उन फ़ुरूई मसाएल पर झगड़ने में ख़र्च हो रही हैं जो न कभी तय हुए हैं और न कभी हो सकते हैं। हम छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे का गिरेबान थामने, उस पर कीचड़ उछालने और उसे तान व तश्नीअ का हदफ़ बनाने में इस क़द्र मह्व हो चुके हैं कि मिल्लते इस्लामिया के अस्ल मसाएल हमारी नज़रों से ओझल हैं और उसूले दीन का मैदान हमने दुश्मन की यलग़ार के लिए ख़ाली छोड़ रखा है।

इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ की ज़रूरत व अहमियत वह चीज़ है जिसके बारे में आज तक किसी को कोई कलाम नहीं हुआ, शायद ही कोई मुसलमान ऐसा हो जो बाहमी झगड़ों को मुज़िर और ख़तरनाक़ न समझता हो, लेकिन उसके बावजूद इन्तिशार व इफ़्तिराक़ की जो अलमनाक सूरत हमारे सामने है उसकी वजह हमारे नज़दीक यह है कि इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ के मफ़हूम को सही तौर पर समझा नहीं गया, हममे से बाज़ अफ़राद तो वह हैं जो इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ का मतलब यह समझते हैं कि तमाम मुसलमान हर-हर जुज़्वी मसले में उनके नज़रियात को तस्लीम कर लें, लिहाज़ा जब तक कोई शख़्स उन नज़रियात को न अपनाए जिन्हें वह दुरूस्त समझते हैं, उस वक़्त तक वह उसके साथ किसी इश्तिराके अमल और किसी क़िस्म के तआउन को गवारा नहीं करते, उसका लाज़मी नतीजा यह है कि उनकी तमाम तर तवानाइयां अपने मख़सूस फ़ुरूई मस्लक की तब्लीग़ व इशाअत में सर्फ़ होती हैं और वह इस मस्लक की तब्लीग़ के लिए कभी-कभी ऐसा तरीक़ा अपनाते हैं जो दूसरों को क़रीब लाने के बजाए इफ़्तिराक़े इन्तिशार की फ़िज़ा को मज़ीद तक़वियत पहुंचाता है।

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी साहब
(इब्लाग़, अप्रैल १९६८ई०, पेज: ३-४)

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Issue: 11 *November 2021* Volume: 13

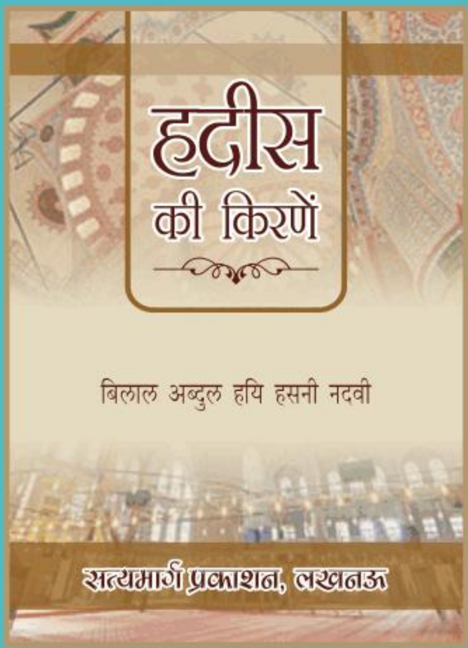

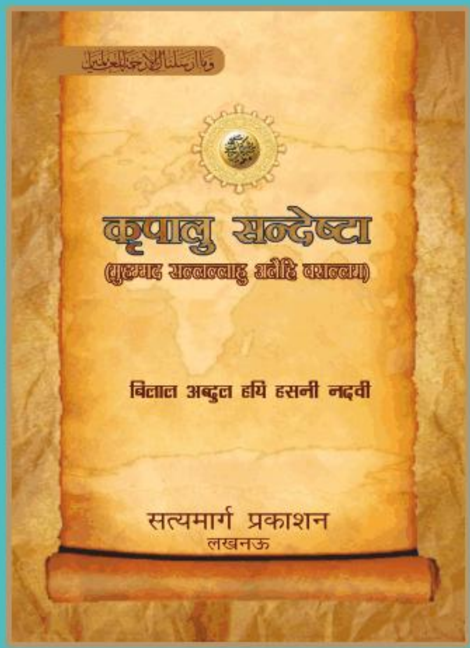

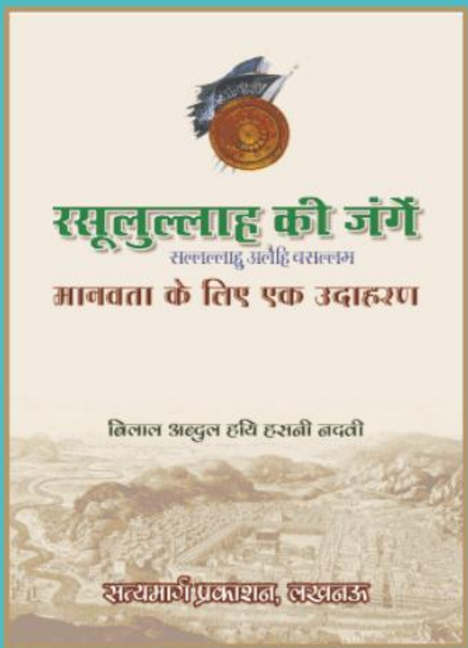

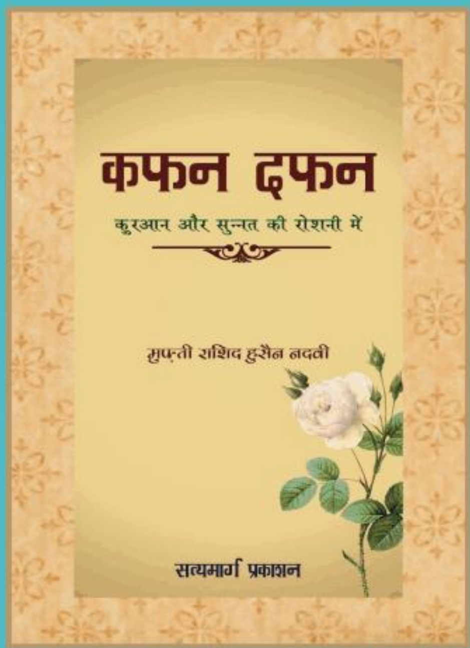

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI

Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.